सामर्थी

वक्तव्य

एक से एक को

Dynamic Churches
International

समर्पण

प्रशिक्षण की यह पुस्तक प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए निर्माण की गयी है जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार सुनाने, और दूसरों को भी ठीक ऐसा करने के लिए तब तक प्रशिक्षित करता है, जब तक संसार का प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से प्रभु को न जान ले।

स्वीकृति

इस सामग्री का निर्माण प्रत्येक मसीही को उत्तम जानकारी प्रदान करने के लिए किया गया है, ताकि वह मसीह के साथ अपने चलन में वृद्धि करे और जिन बातों को उसने सीखा है उसे दूसरों को सिखा सके। हम धन्यवाद के साथ उन सभी लोगों को सराहना चाहते हैं जिन्होंने अपने विचारों का सहयोग इस सामग्री का निर्माण करने में दिया।

'' मैं तुझे इसलिए भेजता हूँ, कि तू उनकी आँखें खोले कि वे अन्धकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किये गये हैं, मीरास पाएँ।''

(यीशु मसीह प्रेरितों क काम 26:17b,18)

अतिरिक्त प्रतियों व जानकारी हेतु, सम्पर्क करें:
रेव्ह. पीटर कासुंग
निदेशक
लीडरशिप ट्रेनिंग सेन्टर
बाबूबासा, देवदंगा, चम्पासरी, पोस्ट ऑफिस - आंचल-734003,
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल, भारत

Publisher:
Dynamic Churches International
164 Stonegate Close, Airdrie, Alberta, Canada, T4B 2V2 (403) 912-4438
Email: dcimiddleton@shaw.ca **Website:** www.dynamicchurches.org

© 2007 Dynamic Churches International
All rights reserved. No part of this publication may be copied or reproduced in any form without written permission. Permission is given to copy forms in this book for personal use only.

Printed by Devtech Publishers and Printers Pvt. Ltd.
Email: devtech_printers@sify.com

विषय सूची

	पृष्ठ
परिचय	
अध्याय एक **परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना**	3
अध्याय दो **सुसमाचार सुनाना**	12
अध्याय तीन **सफल घरेलू भेंटवार्ता**	22
अध्याय चार **प्रचार करने के लिए एक सामर्थी संदेश**	32
अध्याय पाँच **एक मित्र के साथ सुसमाचार सुनाने का भरोसा**	40
अध्याय छः **लोगों का लोगों तक पहुँचना**	50
पड़ोसियों के लिए प्रश्न	59
मेहमान / मुलाकात का लेखा	61
प्रशिक्षकों के लिए सामान्य निर्देश	62
सामर्थी जीवन प्रक्रिया का विवरण	69
उपलब्धियों का प्रमाण-पत्र	70

सामर्थी वक्तव्य

एक-से-एक-को

परिचय

यह प्रशिक्षण किसी भी प्रकार से सुसमाचार को प्रस्तुत करने के साथ इस्तेमाल करने के लिए बनाया गया है।

सिफारिश पायी पुस्तकें निम्नलिखित हैं:

क्या आप परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहेंगे ? या **क्या आपने चार आत्मिक नियमों के बारे में सुना ?** दोनों ही पुस्तकें डा. बिल ब्राइट द्वारा लिखित हैं।

परमेश्वर के साथ शान्ति के कदम – लेखक बिली ग्राहम

आत्मा से पूर्ण प्रशिक्षण के लिए हम, डा. बिल ब्राइट द्वारा लिखित पुस्तिका **क्या आपने आत्मा से पूर्ण जीवन की खोज कर ली है ?** की सिफारिश करते हैं।

अन्य पुस्तकों का भी प्रयोग किया जा सकता है परन्तु यह ध्यान रखें कि वे सम्बन्धितनियमों से मेल खाती हों।

केवल उन्हीं पुस्तकों का इस्तेमाल करें जो आपके चर्च अगुवों द्वारा मान्य हों।

उपरोक्त पुस्तकों के इस्तेमाल के कारण इस पुस्तक को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करने में बहुत से नियमों को हियर लाइफ पब्लीशर द्वारा छापी गयी अनेकों पुस्तकों से लिया गया है।

सामर्थी जीवन प्रक्रिया

सामर्थी वक्तव्य, सामर्थी जीवन वृद्धि प्रक्रिया का एक हिस्सा है जिसे मसीहियों को मसीह में सिद्ध बनाने के लिए तैयार किया गया है।

निम्नलिखित चित्र दर्शाता है कि किस प्रकार से सामर्थी वक्तव्य कलीसिया की प्रक्रिया में समा जाता है जिसकी सिफारिश डायनामिक चर्चेज़ इन्टरनैशनल द्वारा की गयी है। (विस्तार विवरण के लिए प्रशिक्षक सामान्य निर्देशों को देखें)

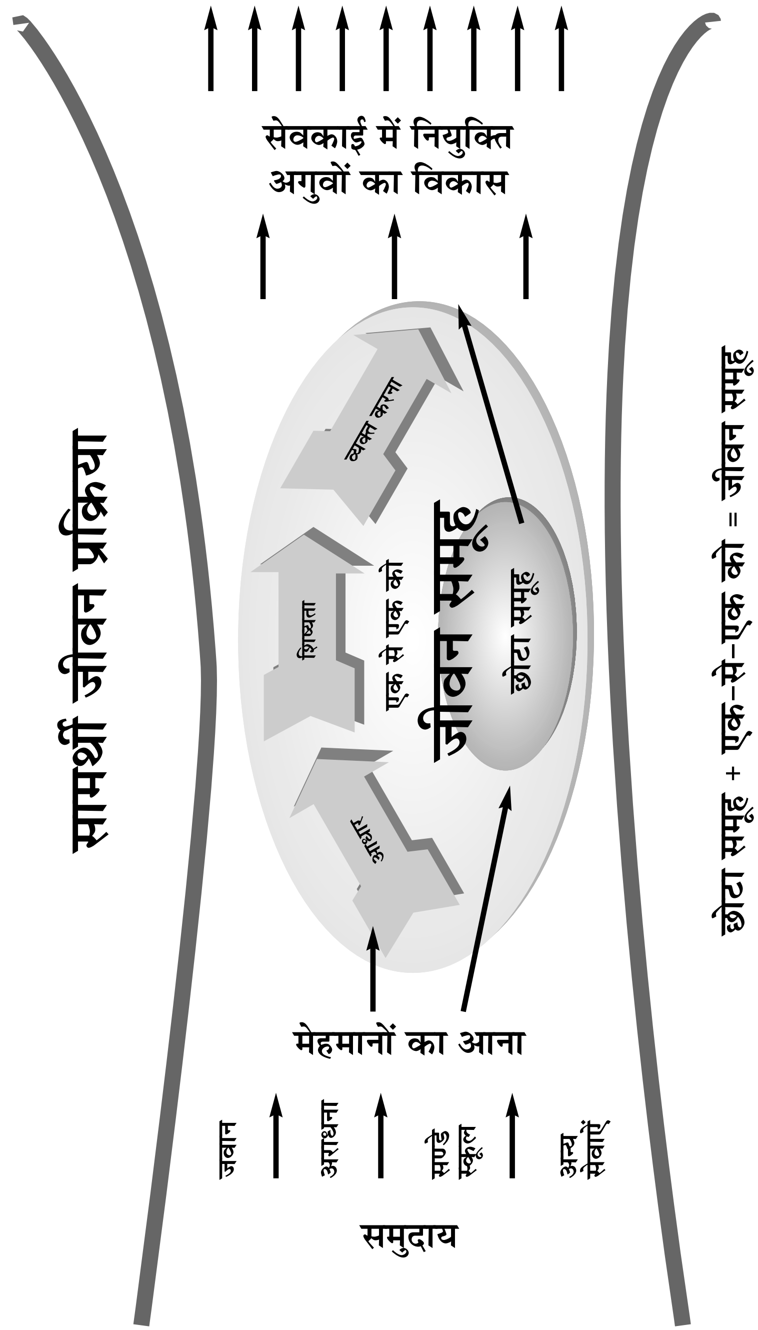

अध्याय एक का मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिए (समाप्त होने पर जाचूँगा)

तैयारी (हमारे मिलने से पूर्ण सम्पन्न हो जाये)

- ❑ 1. मेरे प्रशिक्षक से मिलने से पूर्व अध्याय एक को पूर्णतः पढ़ लूँगा।
- ❑ 2. अपनी एक मिनट की गवाही तैयार कर लें। उसे अपने शिक्षक के सम्मुख पढ़ने को तैयार रहें।
- ❑ 3. सुसमाचार पुस्तिका के प्रथम बिन्दु को वाक्यों व पदों सहित पूर्ण रूप से मुंहजबानी याद कर लें। (अपने शिक्षक के साथ बाँटने को तैयार रहें)

शिक्षक के साथ सम्पन्न करें

- ❑ 1. अध्याय एक को पुनः पढ़ें।
- ❑ 2. गवाही को पढ़ें तथा आवश्यक उन्नति करें।
- ❑ 3. सुसमाचार पुस्तिका के स्मरण बिन्दु को व्यक्त करें।
- ❑ 4. 'घरेलू भेंटवार्ता की प्रक्रिया' को संक्षिप्त रूप में प्रदर्शित करें। (निम्नलिखित बिन्दु 8 व 9 को देखें)
- ❑ 5. शिक्षक पर ध्यान दें चर्च के किसी सदस्य को फोन करके अध्याय दो के लिए मिलने का समय निश्चित करें।

प्रार्थना का समय

- ❑ 6. शिक्षक के साथ चर्चा करें तथा तीनों मित्रों के नाम की सूची दें। हम प्रत्येक सप्ताह उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

  ____

  ____

  मैं इस हफ्ते इस विषय पर प्रार्थना चाहता हूँ:

  ____

  ____

  हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

नियुक्त (मिलने के) समय के लिए प्रार्थना करें। जिन लोगों से हम मिलेंगे उनके लिए नाम-ब-नाम प्रार्थना करें। सुसमाचार के प्रति उनके सकारात्मक प्रतिउत्तर के लिए प्रार्थना करें।

- ❑ 7. अध्याय दो के मूल्यांकन को पढ़ें। अगली बार मिलने से पूर्व तैयारी के काम सम्पन्न कर लें।

प्रचारकीय भ्रमण:

- ❑ 8. एक साथ अपना परिचय दें तथा उनसे मित्रता बनायें।
- ❑ 9. शिक्षक पर ध्यान दें जब वह निम्नलिखित बातों में अगुवाई करता हो तो चुपचाप रहें:
  - जब वह अपनी गवाही बताये।
  - कुरेदने वाले भिन्न प्रश्न करें।
  - सुसमाचार या आत्मा से पूर्ण अपने जीवन के संदेशों को बांटें।
  - उन्हें जीवन समूह में आने का न्योता देता है (छोटा समूह और एक से एक को प्रशिक्षण)
  - भेंट को प्रार्थना के साथ में समाप्त करें।
  - मेहमान/सम्पर्क लेखे को मिलने के उपरान्त पूर्ण करें। (यह रिपोर्ट आपके समूह अगुवों को सौंप दी जानी चाहिए।)

सामर्थी वक्तव्य

अध्याय 1

परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना

परिचय

बधाईयाँ!

आप मनुष्य जाति का सर्वाधिक महान प्रयास करने जा रहे हैं। यह इतना बहुमूल्य व महत्वपूर्ण है जिसके लिए ''यीशु ने महीमित स्वर्ग को छोड़ दिया'' ताकि वह इस कार्य को पूरा कर सके। जैसा हम यूहन्ना 17:4 में पढ़ते हैं, कि क्रूसीकरण से ठीक पहले वह अपने पिता से प्रार्थना करता है *''जो कार्य तूने मुझे दिये थे, उन्हें पूरा करके इस धरती पर मैंने तेरी महिमा की है''* जब वह हम सब को बचाने के लिए हमारे पापों के बदले क्रूस पर अपनी जान दे रहा था, उसने कहा *''पूरा हुआ''*। अब आपके लिए यह शुभ अवसर है कि आप उसकी महान सेवकाई का हिस्सा बन सकें, जो सेवकाई संसार को परमेश्ववर से जोड़ने, मेल-मिलाप की सेवकाई है। यदि आप इस कार्य को करें जो उसे सबसे अधिक भाता है तो परमेश्वर आपको आशीष देगा।

> *''और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को जिसे तूने भेजा है जानें।''* यूहन्ना 17:3

यदि आप आज मसीही हैं तो वह सिर्फ इसलिए हैं कि परमेश्वर आप तक पहुँचा, और आपने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण करके उसे प्रतिउत्तर दिया। आपके पाप क्षमा हुए और आपके पास मसीह में शान्ति है।

व्यक्ति विकास

मेरे जीवन को तैयार करना

यीशु ने अपने चेलों को सर्वप्रथम क्या निर्देश दिये थे?

मरकुस 1:17 ______________________________

____

यीशु से मिलने के उपरान्त यीशु ने क्या किया?

यूहन्ना 1:40-42 ______________________________

____

यीशु की अन्तिम आज्ञा क्या थी?

मत्ती 28:18-20 ______________________________

____

प्रेरितों के काम 1:8 ______________________________

____

प्रेरित पौलुस यीशु मसीह के सुसमाचार से क्यों नहीं लज्जाता था?

रोमियों 1:6 ______________________________

____

अपने जीवन के लिए पौलुस का क्या लक्ष्य था?

कुलुस्सियों 1:28-29 ______________________________

____

जो भी कुछ यीशु ने किया या कहा उसने अन्ततः यीशु के जीवन के उद्देश्य में योगदान दिया, जो कि संसार को छुटकारा देना था। उसने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा संसार को अपना प्रेम प्रगट किया। यीशु चाहते हैं कि आप उनके ऐसे शिष्य बनें, जो दूसरों को **जाकर** सुसमाचार सुनायें तथा उन्हें **चेला बनायें**।

चेला बनाना एक प्रक्रिया है

''इसलिए तुम जाओ, सब जाति के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बाते जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।''

– मत्ती 28:19-20

उन्हें चेला बनाओ जो...

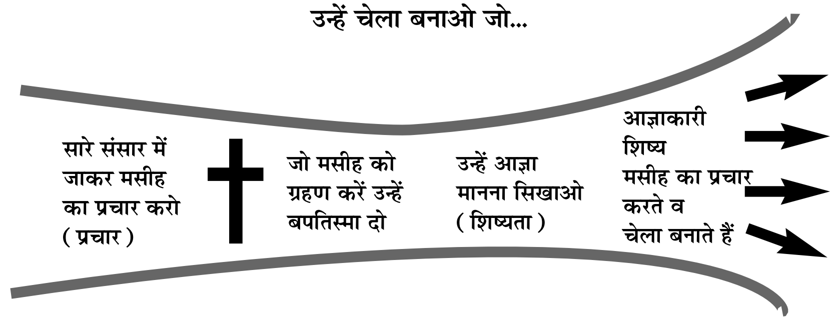

चेले (शिष्य) बनाना एक प्रक्रिया है

एक मसीही होने के नाते, हम इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के ज़िम्मेदार हैं, परन्तु इस प्रक्रिया का सर्वप्रथम कदम सुसमाचार प्रचार करना है। पहले कदम को उठाये बग़ैर चेले बनाना असम्भव है।

इससे पहले कि आप दूसरों में यीशु का प्रचार करें आपको तैयारी की आवश्यकता है।

1. परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को लेकर सुनिश्चित रहें। जब तक आप यीशु को व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानते हैं आप किसी दूसरे को मसीह में प्राप्त शान्ति के बारे में नहीं बता पायेंगे।
   क्या आप जानते हैं कि मसीह आपमें रहता है? ________________
   क्या आप जानते हैं कि मसीह आपके जीवन में है?
   ____
   ____
   ____

2. निश्चित रहें कि आप किसी भी पाप के अंगीकार करने को तैयार हों। पाप आपके जीवन में परमेश्वर की सामर्थ्य को बहने में रुकावट डालता है। यदि आप पराजित मसीह हैं तो आप दूसरों में मसीह का सुसमाचार नहीं बाँटना चाहेंगे क्योंकि वर्तमान में आपके जीवन की सच्चाई वैसी नहीं है। इस साधारण जाँच का सहारा लें (हाँ या ना में जवाब दें)
   क्या कोई ऐसा पाप है, जिसका अंगीकार करने से मैं कतराता हूँ? ________
   क्या मैंने मसीह के साथ सम्बन्ध के आनन्द को खो दिया है? ________
   क्या परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं का जवाब देता है? ________

पुन: परमेश्वर के प्रेम और क्षमा का अनुभव करने के लिए अपने पापों का अंगीकार करें।

1. पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें कि वह आपके जीवन के उन पापों को प्रगट करें जिनका आपने अंगीकार नहीं किया है।
2. अपने पापों की सूची तैयार करें। परमेश्वर को बतायें कि आपके जीवन में क्या-क्या गलतियाँ हैं। यह सूची आपके और परमेश्वर के बीच है।
3. उस सूची के एक तरह 1 यूहन्ना 1:9 की प्रतिज्ञा को लिखें।
4. परमेश्वर की क्षमा तथा शुद्धिकरण के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें।
5. उस सूची को नष्ट करें।
6. हो सकता है कि आपको किसी से क्षमा माँगनी पड़े, या ज़रूरत पड़ने पर कुछ वापस भी करना पड़े।

जब आप एक बार अपने पापों की क्षमा व शुद्धि के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते तथा पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ्य पाते हैं तो आप दूसरों में अपनी गवाही बाँटने के लिए तैयार हैं कि किस प्रकार से आपने यीशु को व्यक्ति रूप में अपनाया।

व्यवहारिक प्रशिक्षण

''मेरी जीवन कथा'' कार्यालय

इस कार्यालय का उद्देश्य यह है कि आप एक गवाही को लिखकर दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकें।

किस प्रकार से ''मेरी जीवन कथा'' - व्यक्तिगत गवाही को तैयार करें।
एक व्यवस्थित तरीके से कोई भी विषय बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। ध्यानपूर्वक तैयार की गयी एक गवाही, जो पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त हो, किसी भी परिस्थिति में प्रभावशाली साबित हो सकती है। यह हमारी इच्छा होनी चाहिए कि हम मसीह को इतना स्पष्ट, आकर्षित, फिर भी इतने सरल तरीके से प्रस्तुत करें कि प्रत्येक सुनने वाला भी उसे जानना चाहे, और वह यह भी जान जाये कि ''कैसे'' उसे (परमेश्वर को) व्यक्तिगत तौर पर पाया जा सकता है।

व्यक्तिगत गवाही के दौरान क्या करें और क्या न करें।

करें:
1. जब आप लिखते हैं तो परमेश्वर से बुद्धि और अगुवाई माँगे। (याकूब 1:5,6)
2. चार बिन्दुओं की रूपरेखा का पालन करें ''मेरी जीवन कथा'' (उदाहरण के कार्य पेज को देखें)
   क. मसीह को जानने से पूर्व अपने जीवन के बारे में बतायें।
   ख. बतायें कि कैसे आपने यीशु को जाना (खास रूप में)
   ग. मसीह को ग्रहण करने के उपरान्त अपने जीवन के बारे में बतायें। (जो सकारात्मक बदलाव उसने आपके जीवन में किये, उनका आपके जीवन में क्या महत्व है)
   घ. विशेषरूप में एक बाइबल वचन को बतायें।
   3. यदि आपने युवा अवस्था में मसीह को ग्रहण किया है तो 'ग' बिन्दु पर ज़ोर दें।
4. बिन्दु 'क' के लिए लगभग 10 सेकण्ड, (ख) के लिए 20 सेकण्ड, 'ग' के लिए 25 सेकण्ड तथा 'घ' बिन्दु के लिए 5 सेकण्ड का प्रयोग करें। बिन्दु 'क' व 'ख' भूतकाल का इतिहास है। एक बार लिखने के बाद बार-बार बदलाव न करें। 'ग' बिन्दु नयी बातों से भरा हो-कि मसीह आपके जीवन में अब क्या कर रहा है।
5. ध्यान आकर्षित करने वाले वाक्यों के साथ प्रारम्भ करें तथा प्रभावशाली ढंग से समापन करें। इस पूरे प्रकरण में एक विषय को पकड़े रहें। उदाहरण के तौर पर:

जीने का उद्देश्य	अपनापन
परमेश्वर का वचन	उद्धार की निश्चितता
मृत्यु के भय से आज़ादी	जीवन के भय से आज़ादी

स्वयं से आज़ादी	मन की शांति
पूर्णता	परमेश्वर का प्रेम
परमेश्वर की क्षमा	सफलता

6. इस तरीके से लिखें कि सुनने वाले अपने आपको भूतकाल और वर्तमान में आपके साथ जुड़ा हुआ महसूस करें। अपने स्वभाव में परिवर्तन को लेकर चर्चा करें जैसे: नफ़रत से प्रेम, बदले की भावना से देखभाल से, निराशा से आनन्द, चिन्ताओं से शान्ति, जल्दबाज़ी से धीरज, अनुशासनहीनता से अनुशासित जीवन में।
7. अन्तिम रिपोर्ट होने से पूर्व आवश्यकतानुसार बातों को ध्यानपूर्वक जोड़ें।
8. अपनी गवाही को दोहरायें और तब तक अभ्यास करें जब वह आप में स्वाभाविक न हो जाये।

न करें:-

1. मसीहियों में अभयस्त शब्दों का इस्तेमाल न करें- जैसे ''उद्धार पाये हुए'' ''धर्मान्तरित'', ''कायल'', ''नया जन्म'' तथा ''पाप''। यद्यपि यह शब्द और वाक्य हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं परन्तु बहुत सी बार ग़ैर मसीहियों द्वारा उन्हें गलत समझा जाता है।
2. ज़्यादा बातें न करें, हवा में मुक्के न मारें, या ज़्यादा अपनी पुरानी गाथा को न लेकर बैठ जायें, कि आप पहले कैसे थे।
3. ''अदभुत'' ''महिमामय'' ''अति उत्तम'' जैसे शब्दों का प्रयोग न करें।
4. अन्य संस्थाओं का नाम न लें ख़ासतौर पर उपहास के भाव में।
5. किसी समूह या व्यक्ति विशेष के बारे में नकारात्मक बातें न बोलें।
6. किसी को भी यह दिलासा न दें कि मसीही जीवन परेशानी मुक्त जीवन है।

अपनी ''जीवन कथा'' को जाचें

1. मेरा विषय क्या है? ____________________
2. क्या मेरी शुरूआत ने उनके ध्यान को आकर्षित किया? ____________

यीशु को गृहण करने से पूर्व मेरा जीवन

1. याद रखें कि मैं अन्य जाति के लोगों से बातें कर रहा हूँ। क्या वे इससे सम्बन्धित हैं? क्या मेरी बातें वास्तविकता है?
2. किस बात ने मुझे यह एहसास दिलाया कि मुझे यीशु की ज़रूरत है?

मैंने यीशु को कैसे ग्रहण किया

1. क्या मैंने ख़ासतौर पर बताया कि ''कैसे'' मैंने यीशु को अपने जीवन में आमन्त्रित किया?
2. आपकी गवाही सुनने के पश्चात क्या किसी गैर मसीही ने यह जानना चाहा कि कैसे वह अपने जीवन में यीशु को अपना सकता है?

यीशु को ग्रहण करने के पश्चात मेरा जीवन

1. यीशु ने जिन तरीकों से मेरे जीवन को परिवर्तित किया क्या मैं उन तरीकों का स्पष्ट उदाहरणों द्वारा व सरलता से बखान कर पाया?
2. क्या यह सच्चाई है? याद रखें; कोई भी सिद्ध नहीं होता।
3. क्या इससे यह झलकता है कि मसीह मेरे जीवन में बदलाव ला रहे हैं?

उचित बाइबल के वचन:

1. क्या यह वचन ''मेरे जीवन की कहानी'' के विषय के साथ मेल खाते हैं?

जब आप अपनी गवाही को बांटते हैं तो निश्चित रहें:

1. पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर प्रेम व उत्साह के साथ अपनी गवाही बांटें (इफिसियों 5:18)
2. स्वाभाविक रूप से, आराम से बोले।
3. बोलते समय अनाचारिक बातों को न दोहरायें, जैसे: नाक खुजाना, बार-बार गला साफ करना और ''अम्म'' या ''आह'' का प्रयोग करना।
4. यीशु मसीह के प्रति ''निर्णय'' लेने के लिए किसी प्रकार का दवाब न डालें। याद रखें ''मनुष्य आत्मा से जन्म'' न तो दवाब से और न तर्कों के कारण पाता है यद्यपि परमेश्वर इन दोनों ही बातों का इस्तेमाल कर सकता है।
5. लोगों पर प्रचार न करें। एक **गवाही** को प्रस्तुत करें, कोई भाषण नहीं। **''मैं''** बोलें न कि ''तुम''। याद रखें यह **आपकी** कहानी है।
6. **अधिकतर मुस्कुरायें!** परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको एक सुखद, चमकता चेहरा दे।

''मेरे जीवन की कहानी'' कार्य पृष्ठ

यीशु को ग्रहण करने से पूर्व मेरा जीवन

कैसे मैंने यीशु को पाया (विशेष रूप में)

मसीह को ग्रहण करने के पश्चात मेरा जीवन

उचित बाइबल पद

अध्याय दो के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिए (जब खत्म होगा तो जाँचूंगा)

तैयारी

- ❑ 1. अध्याय दो की सम्पूर्ण पाठय सामग्री को पढ़ें।
- ❑ 2. अपने शिक्षक के साथ मेरी गवाही का अभिनय करने को तैयार रहें।
- ❑ 3. सुसमाचार पुस्तिका से बांटने के अभिनय के लिए तैयार रहें।
- ❑ 4. सुसमाचार पुस्तिका का बिन्दू दो स्मरण करें। (अपने शिक्षक को इसे बाँटने के लिए तैयार रहें)

शिक्षक के साथ सम्पन्न करें

- ❑ 1. अध्याय दो को पुन: पढ़ें।
- ❑ 2. गवाही का अभिनय।
- ❑ 3. सुसमाचार पुस्तिका से बखान करते समय शिक्षक पर ध्यान दें।
- ❑ 4. सुसमाचार पुस्तिका के बिन्दू दो को याद से व्यक्त करें।
- ❑ 6. घरेलू भेंटवार्ता की प्रक्रिया पर पुन: विचार करें (नीचे 10 व 11 बिन्दू को देखें)

प्रार्थना का समय

- ❑ 8. अपनी सूची के तीनों नामों के लिए निरन्तर प्रार्थना करते रहें।

  मैं इस हफ्ते इस विषय पर प्रार्थना चाहता हूँ।

  एक साथ हमारे नियुक्त समय के लिए प्रार्थना करें।

- ❑ 9. ''अध्याय तीन के मूल्यांकन'' पर पुन: विचार करें। अगली बार मिलने से पूर्व तैयारी के काम सम्पन्न कर लें।

प्रचारीय भ्रमण:

- ❑ 10. एक साथ अपना परिचय दें तथा मित्रता बढ़ायें।
- ❑ 11. शिक्षक पर ध्यान दें जब वह:
  - अपनी गवाही बतायें।
  - कुरेदने वाले प्रश्न करें।
  - सुसमाचार या आत्मा से पूर्ण अपने जीवन के संदेशों को बांटें।
  - उन्हें जीवन समूह में आने का न्योता दें (छोटे समूह या एक से एक को प्रशिक्षण में)।
  - भेंट को प्रार्थना के साथ समाप्त करें।
  - मेहमान/समपर्क लेखे को मिलने के उपरान्त पूर्ण करें। (यह रिपोर्ट आपके समूह अगुवों को सौंप दें।

अध्याय 2

सुसमाचार सुनाना

व्यक्तिगत विकास

यीशु मसीह का एक प्रभावशाली गवाह बनने के लिए, हमें सभी उत्तम सम्भव तरीकों को सीखना होगा। परमेश्वर ने हमें उसके शुभ सन्देश को बाँटने के लिए चुना है और ज़रूरत से बढ़कर सुसमाचार प्रचार करने के उपाय दिये हैं। तैयारी अति आवश्यक है। आइये हम इस बात को देखें की हम किस प्रकार से प्रभावशाली गवाह बन सकते हैं।

प्रचार हेतु सामर्थी बनाये गये

जब आप परमेश्वर के प्रेम और क्षमा तथा उसकी पवित्र आत्मा से भर जाते हैं, तब आप बहुतायत के जीवन का आनन्द उठाते हैं। और अब आप इसे दूसरों में बांटना चाहेंगे। और आपके पास अपने विश्वास को प्रभावशाली ढंग से बांटने के लिए सामर्थ होगी।

एक आत्मा से पूर्ण जीवन मसीह निर्देशित जीवन होता है जिसके द्वारा मसीह आप में और आपके द्वारा पवित्र आत्मा की सहायता से अपना जीवन जीता है। आप विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा से भर सकते हैं, विश्वास के द्वारा ही उसके कायदे के अनुसार फलदायक जीवन पा सकते हैं।

आप पवित्र आत्मा के द्वारा भरे जा सकते हैं यदि:

क. आप अपने सारे परिचित पापों को अंगीकार करें। (भजन संहिता 66:18)

ख. परमेश्वर व उसकी इच्छा के सम्मुख समर्पण करें। (रोमियों 12:1,2)

ग. पवित्र आत्मा पर भरोसा रखें कि वह आपको इफिसियों 5:18 की आज्ञानुसार "पवित्र आत्मा से भर जाओ" तथा 1 यूहन्ना 5:14,15 के वायदे अनुसार आपको भर देगा। उसके वायदों को लिखें।

____

____

____

____

____

हम जानते हैं कि यह परमेश्वर की इच्छा है क्योंकि वह हमें भरने की आज्ञा देता है। और हम यह भी जानते हैं कि वह हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देगा क्योंकि वह उसकी इच्छा हैं।

पवित्र आत्मा से भरे जाने के लिए विश्वास से कैसे प्रार्थना करें

यदि आप निश्चित होना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा आपके जीवन में नियन्त्रण रखता है तब यह प्रार्थना करें।

हे परमश्वेर मैंने अपनी मनमानी करके तेरे ख़िलाफ पाप किया है। मेरे पापों को क्षमा करने के लिए धन्यवाद। मैं अब आपसे विनती करता हूँ कि आप मेरे जीवन का सम्पूर्ण अधिकार लें। विश्वास से अब मैं पवित्र आत्मा की सामर्थ व नियन्त्रण का ऐलान करता हूँ और मेरी अगुवाई करने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

क्या आपने यह प्रार्थना की? ______________________

क्या आप जानते हैं कि अब आप पवित्र आत्मा से भरे हैं? ____________________

आप कैसे जानते हैं? __________________

निरन्तर सामर्थ्य

आपकी इच्छा के एक कार्य द्वारा, यदि आप अपने जीवन के पापों से सतर्क हो जायें तो आप प्रतिदिन पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को निरन्तर अनुभव कर सकते हैं।

1. परमेश्वर के साथ सहमत हों, कि आपने पाप किया है (विशेष रूप में)। आपके जीवन के स्वभाव व क्रियाओं को बदलने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करें।
2. आपके जीवन का नियन्त्रण आप परमेश्वर को दें।
3. विश्वास के द्वारा अपने जीवन में पवित्र आत्मा की परिपूर्णता का एलान करें।
4. भरोसा रखे कि अब वह आपको अगुवाई करता तथा सामर्थी बनाता है।

जब आप लगातार पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर चलते रहेंगे, परमेश्वर की शान्ति आप में बनी रहेगी। आप अधिकाधिक मसीह के समान बन जायेंगे। आप में मसीह के प्रेम व तरस होने की वजह से, आपके भीतर खोये हुओं के प्रति प्रेम व तरस उत्पन्न होगा। तब आप यह बांटने को तैयार होंगे कि किस प्रकार से वह परमेश्वर की शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं। आप उस पर अधिकाधिक भरोसा करना सीखेंगे, आप उसे आज़ादी देंगे कि वह आप में मसीह के चरित्र का निर्माण करें तथा आपको उसका गवाह बनने की सामर्थ्य प्रदान करें।

व्यवहारिक प्रशिक्षण

प्रचार के लिए तैयार

एक मसीह होने का क्या अर्थ है इस विषय को लेकर बहुत से लोग अत्यधिक भ्रम में रहते हैं। हमारी ज़िम्मेदारी मसीह के सुसमाचार को इतना स्पष्ट तरीके से बताना है कि वे इस बात को समझ जायें।

यह क्यों महत्वपूर्ण है कि वे मसीह के बारे में सुनें व समझें?

यूहन्ना 14:6 ______________________________

____

प्रेरितों के काम 4:12 ______________________________

____

पौलुस का सन्देश क्या था?

1 कुरिन्थियों 1:23, 24 ______________________________

____

इफिसियों 3:8 ______________________________

1 कुरिन्थियों 15:3-6 के अनुसार सुसमाचार के प्रमुख अंग क्या हैं?

उनकी सूची बनायें 1 ______________________________

2 ______________________________

3 ______________________________

4 ______________________________

हमें सुसमाचार तार्किक व सहज ढंग से प्रस्तुत करना चाहिये। सुसमाचार पुस्तिका आपको उन वचनों पर केन्द्रित होने में सहायता करेगी, जो मसीह को ग्रहण करने वाले लोगों को सुनने की अति आवश्यकता है।

लघु पुस्तिका को इस्तेमाल करने के फायदे हैं:

1. सुसमाचार सुना और देखा जा सकता है।
2. सुसमाचार उस व्यक्ति के पास छोड़ा जा सकता है जो:
   क. नये विश्वासी को सुसमाचार की घोषणाओं को बार बार अपने आप पढ़ने में सहायता करता है।
   ख. तुरन्त ही एक नये विश्वासी को एक विधि देता है जिसके द्वारा वह दूसरों में मसीह का प्रचार कर सकता है।
   ग. जो लोग प्रार्थना नहीं करते हैं उन्हें यह अवसर प्रदान करता है कि वह यह पढ़ सकें कि अलग प्रकार के मसीही कैसे बना जाता है।
3. लघु पुस्तिका को कण्ठस्थ किया जा सकता है और जहाँ किताब न ले जा सके वहाँ मुँह ज़ुबानी वचन सुना सकते हैं।
4. लघु पुस्तिका से वचन याद करने के बावजूद, वही वचन हम इच्छा होने पर बाइबल से पढ़ सकते हैं।

सुसमाचार पुस्तिका का इस्तेमाल करते हुए कैसे सुसमाचार प्रचार करें-

क. परमेश्वर के लिए उपलब्ध रहें

2 तिमुथियुस 4:2 कहता है *''तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा।''*

यदि आप उपलब्ध होते हैं तो परमश्ेवर आपके द्वारा लोगों को मसीह में ले आयेगा। प्रशिक्षण प्राप्त करने तथा सुसमाचार प्रचार के कौशल को सीखने के द्वारा आप उपलब्ध होने तथा परमेश्वर के लिए इस्तेमाल होने को तैयार हो रहे हैं। पवित्र आत्मा आपको उन लोगों के पास ले जायेगा जिनका हृदय उसने सुसमाचार सुनने के लिए तैयार किया है।

ख. लोगों के प्रति संवेदन शील बने

पुस्तिका की बातों को बाँटने का मुख्य उद्देश्य हमेशा परमेश्वर के प्रेम को बाँटना होना चाहिये। कभी भी मसीह को ग्रहण करवाने के लिए न तो दबाव डालें और न बहस करें। हमारा कार्य गवाही देना व प्रचार करना है और परमश्ेवर का कार्य उसे बदलना और मसीह में विश्वास में लाना है। होने दें कि मसीह आप में होकर उस व्यक्ति से प्रेम कर सके । सुसमाचार प्रस्तुत करने के तरीकों को स्पष्ट व सरल रखे। सबसे अच्छा तरीका बिना किसी विश्लेषण के इस पुस्तक को पढ़ देना है। (याद रखें जैसे आप आदर्श के रूप में पुस्तिका से पढ़कर उन्हें शिक्षा देंगे। इससे वह निश्चित रूप में खुद भी वैसा ही करेंगे)। एक मशीन के जैसे इस पुस्तक को न पढ़ें, उत्साहित रहें। याद रखें कि आप केवल एक पुस्तिका को ही नहीं बाँट रहे हैं वरन आप सर्वोत्तम समाचार-सुसमाचार को बांट रहे हैं।

यदि सुनने वाला व्यक्ति रूचि नहीं ले रहा है तो ऐसा महसूस न करें कि इस पुस्तिका को बाँटना ही है, या खत्म करना है। प्रत्येक जन मसीह की स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। हमेशा व्यक्ति को आपके व संदेश के बारे में सकारात्मक प्रभाव पर छोड़ें, चाहे उसका प्रतिउत्तर जैसा भी रहे। पुस्तिका को उसके पास छोड़ने का प्रयास करें।

उस व्यक्ति को प्रार्थना करने का अवसर प्रदान करें। ज़्यादातर लोग चाहते हैं कि उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञा मिले और वे आपकी सहायता का भी स्वागत करेंगे, परन्तु कोई भी जन दबाव में नहीं पड़ना चाहता। मसीह को ग्रहण करने हेतु उन्हें प्रार्थना करने को कहने में कभी संकोच न करें। ऐसा न करने से उनके मन में आपकी गम्भीरता और भरोसे पर शक उत्पन्न होगा कि क्या वास्तव में यह सुसमाचार है या नहीं।

हमें उन्हें ऐसे कगार पर छोड़ना चाहिये जहाँ से वह हमसे या किसी और से बाद में, मसीह के साथ उनके सम्बन्ध के विषय में चर्चा करेंगे।

ग. आपकी प्रस्तुति को कैसे व्यक्तिगत बनायें

1. मित्र के समान बनें। व्यक्ति का नाम लें।
2. पुस्तिका को अपने हाथों में पकड़े रहें ताकि वह सुनने वालों को स्पष्ट दिखाई दें।

3. चित्रों व विशेष बिन्दुओं पर उनका ध्यान लगाने के लिए पैन या पैन्सिल का इस्तेमाल करें।
4. केवल व्यक्ति के सामने पढ़ें नहीं, वरन व्यक्ति से उन बातों का बखान करें।
5. पुस्तिका से पढ़ें। फिर भी आप पुस्तक को पढ़ने में इतने न खो जायें कि सुनने वालों का बिल्कुल ध्यान न रहे। जैसे आप पुस्तक को पढ़ते हैं और ऐसा लगे कि कोई जवाब नहीं मिल रहा, तो रुककर प्रश्न करें, क्या इससे आपको कुछ समझ में आ रहा है ?
6. ऐसे प्रश्न पूछे जाने पर जिससे विषय बदल जाये, तो आप कह सकते हैं, ''यह तो बहुत अच्छा प्रश्न है''। क्या हम इसके बारे में पुस्तिका खत्म हो जाने पर चर्चा करें ? उन्हें समझायें कि ज़यादातर प्रश्नों का जवाब इस पुस्तिका का अध्ययन करने के दौरान दिये जायेंगे। मसीह को ग्रहण करने के पश्चात प्रश्नों के उत्तर देना उत्तम रहेगा क्योंकि:
   - क. प्रश्नों के उत्तर देते समय आप सम्बन्धित प्रश्नों को लघु पुस्तिका से संगत कर सकते हैं।
   - ख. पहले आमन्त्रण देने के द्वारा आप अपनी प्रस्तुति को व्यक्तिगत बनाते हैं ताकि व्यर्थ बातों पर समय बिताये जाने की बजाय अर्थपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की जा सके।
   - ग. यह महत्वपूर्ण है कि आप उस व्यक्ति को दिखाये कि किस प्रकार से यीशु मसीह को ग्रहण किया जाता है। यद्यपि वह आपके साथ प्रार्थना न करे फिर भी परमेश्वर उसे बतायी गयी बातों के द्वारा बाद में आपके पास खींच लेगा।

घ. सुसमाचार पुस्तिका को व्यक्त करना

किसी दूसरे व्यक्ति के साथ में अपने विश्वास को बाँटना कोई मुश्किल कार्य नहीं हे। इस पुस्तक के भीतर चार मुख्य बातों को दर्शाया गया हे जिन्हें प्रत्येक मनुष्य को सुनने की आवश्यकता है।

पहला- परमेश्वर का उद्देश्य	दूसरा - हमारी समस्या
तीसरा - प्रभु द्वारा समाधान	चौथा - हमारा प्रतिउत्तर

बिन्दु एक से तीन लिखित बातों को मात्र पढ़ दिया जाये। उन्हें ज़्यादा बख़ान करने की आवश्यकता नहीं है।

ङ व्यक्ति की आत्मिक पहचान करने में सहायता करें

पुस्तक को कैसे ग्रहण किया जाये। **यह कार्य प्रार्थना के द्वारा होता है।** इसलिए लोगों को यह बताना अति आवश्यक है कि केवल मसीही होने के मतलब को जानना ही काफी नहीं है। वह अपने ज़रूरत को समझकर व्यक्तिगत समर्पण करें। उस व्यक्ति की सहायता करने के लिए साधारण रूपरेखा का सहारा लें।

चौथा बिन्दू हमारा प्रतिउत्तर है- मसीह को ग्रहण करें!

प्रकाशित वाक्य 3:20 को पढ़ने के उपरान्त, वाक्यों को पढ़ें तथा चित्र को समझायें। आप कह सकते हैं, ''यह चित्र दो आत्मिक स्थितियों को दर्शाता है, बाँये हाथ की तरफ बना हुआ

व्यक्ति'' परमेश्वर से अलग है। उसका जीवन (पुस्तक में पढ़ें) के समान है। दाये हाथ पर बना हुआ व्यक्ति वह जन है जो यीशु मसीह को ग्रहण करने के परमश्ेवर के नज़दीक आया है। और उसका जीवन (पुस्तक से पढ़ें) द्वारा चलायमान है। इस चित्र का बख़ान करने के पश्चात उनसे पूछें ''क्या आप यहाँ हैं (बांयी ओर इशारा करें) या फिर यहाँ (दाहिनी ओर इशारा करें) ?'' अगले पृष्ठ पर बने क्रम चित्र का अनुसरण करें तथा भिन्न प्रकार के प्रतिउत्तरों पर अभ्यास करें। **यह बहुत आवश्यक है कि आपको भरोसा हो कि आप प्रत्येक परिस्थिति का सामना कर सकते हैं।** अपने विश्वास को प्रचार करने के लिए आपको इससे आवश्यक भरोसा व हियाव प्राप्त होगा। आज्ञाकारी होने के नाते हमें प्रचार करने के लिए तैयार होना होगा। जब हम तैयार होते हैं तो परमेश्वर हमें सामर्थ्य व अवसर प्रदान करता है।

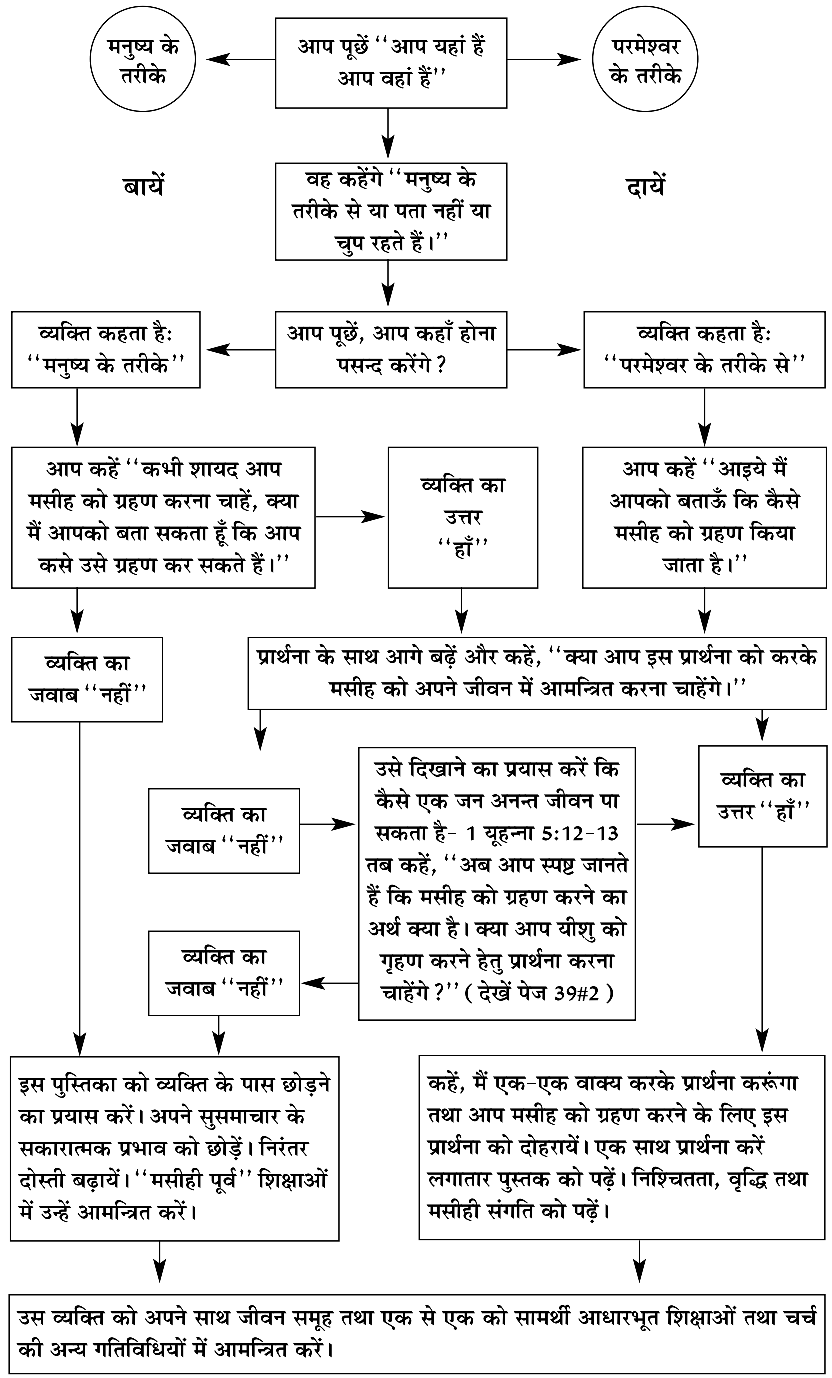

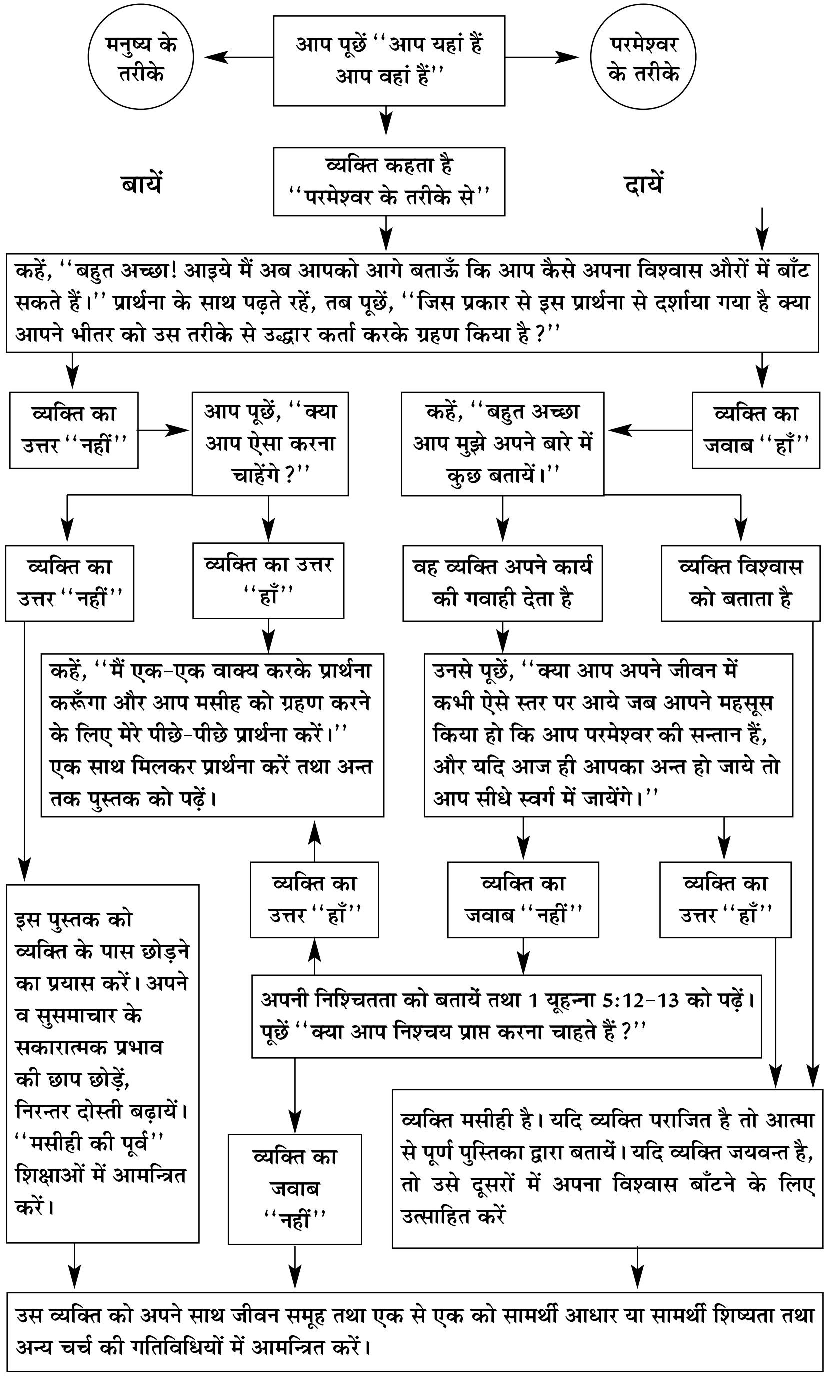

अध्याय तीन का मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिए (जब खत्म हो जायेगा तो जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. अध्याय तीन की सम्पूर्ण पाठ्य सामग्री को पढ़ें।

❑ 2. हमारे मिलने के समय से अपनी गवाही देने के लिए तैयार रहें।

❑ 3. सुसमाचार पुस्तिका के तीसरे बिन्दु को स्मरण करें।

❑ 4. अपने शिक्षक के साथ सुसमाचार पुस्तिका को बाँटने के लिए तैयार रहें।

❑ 5. घरेलू भेंटवार्ता की कार्यप्रणाली के प्रत्येक चरण का अभिनय करने को तैयार रहें। (खण्ड छ: के प्रश्नों का निश्चितरूप में अभ्यास करें)

शिक्षक के साथ सम्पूर्ण करें

❑ 1. अध्याय तीन को पुन: पढ़ें।

❑ 2. गवाही का अभिनय करें।

❑ 3. सुसमाचार के बिन्दु तीन को याद से व्यक्त करें।

❑ 4. एक अविश्वासी के रूप में अपने शिक्षक के सम्मुख पुस्तिका से अभिनय करने को तैयार रहें।

❑ 5. एक घरेलू भेंट के दौरान होने वाले प्रत्येक चरण का अभिनय करें। कुरदने वाले प्रश्नों का खण्ड छ: में अभ्यास करें।

❑ 6. विद्यार्थी अपने एक मित्र के साथ चौथे सत्र के लिए एक फोन करके समय निर्धारित करें। (अध्याय पाँच में देखें कि कैसे मिलने के समय को निर्धारित किया जाता है)

प्रार्थना का समय

❑ 7. जो लोग हमारी प्रार्थना सूची में हैं उनमें सुसमाचार सुनाने के अवसर के लिए प्रार्थना करें।

मैं इस हफ्ते इस विषय पर प्रार्थना चाहता हूँ। ________________________________

____

भेंट के समय के लिए एक साथ मिलकर प्रार्थना करें।

- ❑ 8. अध्याय चार के मूल्यांकन पर नज़र डालें। अगली बार मिलने से पूर्व तैयारी के काम को सम्पन्न कर लें।

प्रचारकीय भ्रमण

- ❑ 9. एक साथ अपना परिचय दें तथा सम्बन्ध स्थापित करें।
- ❑ 10. विद्यार्थी एक मिनट की गवाही बाँटें।
- ❑ 11. शिक्षक पर ध्यान दें जब वह
    - कुरेदने वाले प्रश्न करता है।
    - सुसमाचार या आत्मा से पूर्ण अपने जीवन के संदेशों को बाँटें।
    - उन्हें जीवन समूह में आने का न्योता दें (छोटे समूह या एक से एक को प्रशिक्षण में)
    - भेंट को प्रार्थना के साथ समाप्त करें।
    - मेहमान/समपर्क के लेखे को मिलने के उपरान्त पूर्ण करें। (यह रिपोर्ट आपके समूह अगुवों को सौंप दें)

सामर्थी वक्तव्य

अध्याय 3
सफल घरेलू भेंटकर्ता

व्यक्तिगत विकास

भटके हुओं के लिये किस प्रकार प्रार्थना करें

तीन ऐसे तरीके हैं जो हमारी प्रार्थनाओं में होने चाहिये:

अ. शैतान की उस सामर्थ्य के विरोध में होनी चाहिए जो पापियों को जकड़े रहती है।

1. पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:25, 26

   पापी शैतान के द्वारा ____________________ है।

2. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 4:3,4

   सुसमाचार पर परदा ____________________ पापियों के लिये पड़ा है।

एक भटके हुऐ व्यक्ति के बचाये जा सकने से पहले दो बातें होनी चाहिये।

1. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 10:4

   उसे स्वतन्त्र हो जाना चाहिये ____________________

2. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 2:4,5

   उन्हें सामर्थ्य का प्रकाश प्राप्त होना चाहिए? ____________________

अपने किसी मित्र या प्रिय के बारे में विचार करें जो सुसमाचार में बाधक हो। किस प्रकार शैतान उसे जकड़ रहा है? (उदाहरण: भय, घमण्ड, नशा, संगीत, धर्म आदि)

____

____

उसे (लड़का / लड़की) बाँध रहा है? (उदाहरण: दोस्तों को खो देना, कोई अनन्द नहीं।)

____

____

मध्यस्थता प्रार्थनाओं के द्वारा इन दोनों ही परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

ब. मसीहियों की ओर

परमेश्वर पापियों को तैयार करके दूसरे मसीहियों तक पहुँचता है और फिर दोनों को साथ ले आता है। हमें ऐसे और भी मसीहियों की ज़रूरत है जो स्वेच्छा से परमेश्वर के द्वारा अपने अनुभवों को दूसरों के साथ बाँटने के इच्छुक हैं।

यीशु ने मत्ती 9:37,38 में किस प्रकार अपने शिष्यों को निर्देश दिये?

____

____

____

उसी प्रकार से परमेश्वर आज भी संचालन करता है।

स. हमारे उद्धारकर्ता की ओर

यूहन्ना 6:44 को लिखें ________________________

____

____

एक खोया हुआ व्यक्ति तब तक शैतान के चंगुल से बच नहीं सकता, जब तक परमेश्वर उसके प्रायश्चित को स्वीकार न कर ले। (2 तीमुथियुस 2:25,26)

खोये हुओं के लिए प्रार्थना

आपको खोये हुओं के लिए इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये- यीशु के नाम से शैतान पर अपने अधिकार को दर्शायें। शैतान को उसका पालन करना होगा। उसे समर्पण करना होगा। परमेश्वर की आत्मा खोये हुये व्यक्ति की आत्मा को कायल करके उसे पश्चाताप प्रदान करेगा यदि आप यीशु से प्रार्थना करेंगे तो यीशु उस व्यक्ति के हृदय के द्वार को खटखटायेगा।

यहाँ पर कुछ समय के लिये रूककर अपने मित्र या प्रिय जन के लिये प्रार्थना करें।

व्यवहारिक प्रशिक्षण

एक सफल घरेलू भेंटवार्ता का आयोजन

सुसमाचार प्रचार करने के विभिन्न तरीके हैं और उन सभी के इस्तेमाल करने के अवसर हमें प्राप्त होंगे। उन लोगों के घरों में भेंट करना जो पहले से ही हमारी कलीसिया से जुड़े हुए हैं, सामर्थी वक्तव्य का सर्वाधिक सकारात्मक और उन्नतिशील तरीका है।

घरेलू भेंटकर्ता की कार्यप्रणाली

क. मिलने का समय निर्धारित करें (यदि सम्भव हो)
ख. प्रार्थना करें।
ग. पहुँचने की प्रणाली।
घ. शुरूवाती बातचीत करें।
ड़. उन्हें अपनी कलीसिया से जोड़ें।
च. व्यक्तिगत गवाही को बाँटें।
छ. कुरेदने वाले प्रश्न करें।
ज. अपने संदेश बाँटें।
झ. निर्णय लेने का अवसर दें।
ञ. उन्नति चुनौती।
ट. प्रार्थना द्वारा समापन।

चलिये प्रत्येक भाग का अलग-अलग अध्ययन करें।

क. मिलने का समय निर्धारित करें (यदि सम्भव हो)

1. अपने पासबान या भेंटवार्ता के प्रमुख से लोगों से बात करने और उन्हें बुलाने के लिये सदस्यों के नामों की सूची ले लें।
   नीचे कुछ उदाहरण दिये गये हैं:

अ. कलीसियाई भेंटकर्ता

''नमस्ते ________ मैं ________ चर्च का ________ बोल रहा हूँ। आज आप कैसे हैं? (प्रतिक्रिया के लिये थोड़ा रूकें)। हम बहुत खुश थे कि पिछले रविवार को (या जो कोई भी अवसर रहा हो) आप हमारी कलीसिया में आये। मेरा मित्र ________ और मैं हम कलीसिया की आरे से आपके यहाँ एक भेंटवार्ता के लिये आना चाहेंगे। क्या (यह दिन और समय) ठीक है या फिर (वह दिन और समय) अच्छा रहेगा?'' (अगर इनमें से कुछ भी नहीं तब कोई दूसरा समय नियुक्त करें। और यदि नहीं या सिर्फ वह भ्रमण कर रहे हैं या वह दूसरे चर्च में जा रहे हैं तब उन्हें धन्यवाद दें और फिर से आने का निमन्त्रण दें)

ब. सण्डे-स्कूल या क्लब के बच्चों के माता-पिता से वार्ता:

''नमस्ते ________, मैं ________ चर्च का ________ बोल रहा हूँ। आज आप कैसे हैं? (प्रतिक्रिया के लिये थोड़ा रूकें)। हम (बच्चे या बच्चों के नाम लेकर) अपने सण्डे स्कूल या क्लब में के कार्यक्रमों में इन बच्चों की सहभागिता के लिये इन्हें सराहते हैं। मेरा मित्र ________ और मैं, हम कलीसिया की ओर से आपके यहाँ एक मुलाकात करने के लिये आना चाहेंगे। क्या (यह दिन और समय) ठीक है या फिर (वह दिन और समय) अच्छा

रहेगा ?'' (यदि इनमें से कुछ भी नहीं तब कोई दूसरा समय नियुक्त करें यदि नहीं तब उन्हें इस अवसर के लिये धन्यवाद दें कि उनके (नाम) यहाँ ________ आते हैं। उन्हें प्रोत्साहित करें कि यदि कभी भी कोई भी प्रश्न उनके मन में हो तो वह कलीसिया में फोन पर पूछ सकते हैं, उन्हें सुनिश्चित करें कि आपकी कलीसिया में हमेशा उनका स्वागत है वह किसी भी समय वहाँ जा सकते हैं।

2. यह सबसे अच्छा है कि लोगों से मिलने का समय निर्धारित कर लिया जाये विशेषकर तब जबकि वह चर्च से 10-15 मिनट से ज़्यादा की दूरी पर रहते हैं।

3. आप बिना सूचित किये भी मुलाकात कर सकते हैं। जिस समय आप किसी व्यक्ति से उससे मिलने के समय के लिये बात कर रहे हैं। और वह व्यक्ति व्यस्त हो तब मिलने के लिये कोई और समय निर्धारित करें। जब आप किसी से भेंट करने जा रहे हैं और वह घर पर नहीं हो या किसी कारणवश आपसे न मिल पाये तब ऐसी परिस्थिति में आपके पास उसी स्थान के अन्य लोगों के नामों की सूची भी होनी चाहिये ताकि आप उस समय पर उनसे भेंट कर सकें।

4. भेंटवार्ता को प्रारम्भ करने से पहले सभी के नामों से पूर्व परिचित हो जायें।

5. यदि आप घरेलू भेंटवार्ता नहीं कर पा रहे हैं तब आप पड़ोसी से सम्बन्धित प्रश्नावली को प्रयोग करें (अध्याय छह: के बाद एक नमूना देखें) आपके प्रशिक्षक ने ज़रूर भेंट करने के लिये अपनी कलीसिया भेंटवार्ता-कोडिनेटर से पड़ोसियों के नामों की सूची को प्राप्त किया होगा। जब भी आपको अपनी योजनायें असफल होती नजर आयें, तो इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के पास आपके लिये कोई और अच्छी योजना है। इस प्रश्नावली के प्रयोग द्वारा आपको एक विकल्प के रूप में दूसरी योजना प्राप्त हो सकती है।

ख. प्रार्थना करें

एक दूसरे के लिये, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य तथा अगुवाई के लिये प्रार्थना करें। जितनों से आप भेंट कर रहे हैं उनके लिये नाम बनाम प्रार्थना करें। लोगों से मिलने की परिस्थितियों पर परमेश्वर के नियन्त्रण के लिये प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि यह लोग भी मसीह को ग्रहण करें और यदि वह मसीही लोग हैं तो यह प्रार्थना करें कि वह पवित्र-आत्मा से भर जायें।

ग. आगमन प्रणाली

1. (यदि आपने मिलने का समय निर्धारित किया है) तो समय पर पहुँचें।

2. ध्यान रखें कि आपकी कार दूसरी कारों का रास्ता न रोके।

3. छोटे आकर की इंजील जरूर लें ताकि ज़रूरत पड़ने पर वचनों को देख सकें ।

4. यदि आप किसी विशेष बात को जैसे प्राचीन, प्राचीन कृतियां, ट्राफीज़ आदि को देखें तो उस पर विशेष ध्यान दें क्योंकि यह आपकी बातचीत में सहायक होते हैं।

5. दरवाज़े की घण्टी को शालीनता से बजायें या दरवाज़े को शालीनता से खटखटाऐं और फिर दरवाज़े से तीन फीट की दूरी पर पीछे खड़े हो जायें। क्योंकि बुलाया गया व्यक्ति जितना हो सके उतना नज़दीक आकर सवाल-जवाब कर सकता है। जब दरवाज़ा खुल जाये तब दोस्ताना तरीके से मुस्करायें और तुरन्त बोलें।

6. दरवाज़े पर ही अपना परिचय दें। आप कहेंगे, **''नमस्ते, मैं ________ हूँ ________ चर्च से आया हूँ। ________ यह है। क्या हम एक छोटी भेंट करने के लिये आ सकते हैं ?''** यदि आप ने मिलने का समय निर्धारित कर लिया है तब कहें, **''हमारे यहाँ आने और आप से मिलने की अनुमति देने के लिये आपका धन्यवाद।''**

7. यदि वह किसी के साथ हैं या किसी कारणवश आपसे नहीं मिल सकते हैं तब आप खुद ही मिलने के लये कोई और समय निर्धारित करें। यदि आप किसी के यहाँ भेंटवार्ता को नहीं कर पा रहे हैं तब बड़ी ही विनम्रता के साथ उनका धन्यवाद दें। वहीं पर एक छोटी सी पुस्तिका छोड़ कर वापस आ जाऐं।

8. घर में प्रवेश करने के बाद स्थानीय अगुवे को मेज़बान की कुर्सी के पास ही स्थान चुनना चाहिए, जिससे कि आसानी से सम्पर्क में आ सके और बातों को बाँट सके। यदि बैठक का कमरा काफी बड़ा या विस्तृत है तब सभी को भोजन की मेज के चारों ओर बैठने का आग्रह करें।

घ. शुरूआती बातचीत करें

यह महत्वपूर्ण बात है कि आप जिनसे मिलने जा रहे हैं उनके बारे में आपको जानकारी होनी चाहिये। उनके प्रति अपनी रूचि को दर्शायें। लोग आशा करते हैं कि बातचीत को आप नियन्त्रित करें। अकसर जब उन्हें वार्तालाप को आगे नहीं बढ़ाना पड़ता तब वह अधिक सहज महसूस करते हैं। उनकी रूचियों के बारे में सकारात्मक टिप्पणी करें। लोगों को अपने बारे में बातें करना अच्छा लगता है। कभी भी यह न दर्शायें कि आप उनका मूल्यांकन कर रहे हैं। प्रश्नों का स्वरूप ऐसा होना चाहिये कि वह एक सामान्य व स्वाभाविक बात लगे। अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ जायें। आराम से बातें करें और थोड़ा मुस्करायें।

नोट: *याद रखें, उनकी गवाही जानने का प्रयास न करें और ऐसे समय पर इस प्रकार के प्रश्न भी न करें जैसे* ***''क्या आप मसीही हैं ?''*** *यह सब निदानात्मक प्रश्नों को पूछते समय अपने आप ही मालूम हो जायेगा। दूसरे व्यक्ति की आत्मिक स्थिति के बारे में कल्पना करने से सावधान रहे। खुले दिमाग से जायें और परमेश्वर पर विश्वास करें कि वही प्रत्येक परिस्थितियों का सामना करने के लिये आपको सामर्थी बनायेगा।*

निम्नलिखित रूप रेखा आपको सही मार्ग पर बने रहने में सहायता करेगी:

1. प्रष्ठभूमि : **''इस स्थान में रहते हुए आपको कितना समय हो गया है ?''** **या ''यहाँ आने से पहले आप कहाँ रहते थे ?''**

2. व्याकरण: (प्रत्यके व्यक्ति से पूछें) **''आप किस प्रकार का कार्य करते हैं ?''**
3. परिवार: उनके घर, बच्चों तथा उनकी रूचियों के बारे में प्रश्न पूछें।

ड. उन्हें अपनी कलीसिया से जोड़ें

1. आत्मिक मुद्दों पर आने के लिये आपको पूछना चाहिये: **''आपने हमारी कलीसिया में आने का निर्णय क्यों लिया ?'' (उनके द्वारा आकर मिलने के लिये धन्यवाद को दर्शायें)**
2. उनके प्रश्नों का उत्तर देने के लिये प्रयत्नशील हरें। आप कहें, ''हम आपसे यह देखने के लिये मिलना चाहते थे कि यदि आपके मन में हमारी कलीसिया के लिये कोई भी प्रश्न है तो आप हमसे पूछ सकते हैं। क्या आपके पास कोई प्रश्न है जिसका हम समाधान कर सकते हैं ?''
   अपनी कलीसिया के बारे में रविवार समाचार या छोटी पुस्तिका द्वारा कुछ बतायें। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रहे हैं, तब उनसे उसका जवाब ढूंढ निकालने का वायदा करें और बाद में उन्हें जवाब दें। उन्हें या उनके परिवार को उस इलाके के लोगों से उनकी रूचि के अनुसार परिचित होने के लिये प्रस्ताव रखें।

   नोट: *इसके बाद टीम के केवल एक ही व्यक्ति को बातचीत और अगुवाई करनी चहिये। बाकी सदस्यों को चुपचाप प्रार्थना करनी चाहिये तथा अन्य बाधाओं जैसे बच्चे या पालतू जानवरों को ठीक से बैठाने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिये।*

च. व्यक्तिगत गवाही

यह कहते हुये अपनी गवाही दें **''हमारा यहाँ पर आकर आपसे मिलने का एक कारण आप के साथ यह बाँटना है कि मसीह यीशु का हमारे लिये क्या अर्थ है। मैं आपके साथ बाँटना चाहता हूँ कि मेरे जीवन में मसीह का क्या अर्थ है।''** (यदि अब बाँटने की बारी आपके साथी की है तब आप कहें: ''———————'' **क्या आप बतायेंगे कि आपके लिये मसीह क्या है ?''**

जब आप अपनी कहानी बतायें तब पवित्र आत्मा को आपको सामर्थ प्रदान करने के लिये आमन्त्रित करें। कुछ लोग आपके अनुभवों को वास्तव में पहचानने लगेंगे। इसे संक्षिप्त ही रखें (लगभग एक मिनट के लिये), किन्तु इसे पूरी गम्भीरता के साथ बांटें।

छ. कुरेदने वाले प्रश्न

निम्नलिखित दोनों प्रश्न किसी व्यक्ति की आत्मिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक होंगे।

''क्या आप यह जानते हैं कि आप अपने आत्मिक जीवन में कहाँ हैं, यदि आज आप की मृत्यु हो जाये तब क्या आप इस बात के लिये सुनिश्चित हैं कि आप स्वर्ग के राज्य में जायेंगे ?''

मान लें कि आज आपको मरना है और आप परमेश्वर के सामने खड़े हैं और वह आपसे कहता है ''मैं तुम्हें अपने स्वर्गीय राज्य में क्यों आने दूँ ?'' तब आप क्या कहेंगे ?'' *

** केनेडी ई.ई. के प्रश्न*

ज. अपना संदेश बाँटें

ऊपर दिये गये कुरेदने वाले प्रश्नों के जवाबों के अनुसार सुसमाचार की छोटी पुस्तिका या आत्मा से भरे जीवन्त संदेश को छोटी पुस्तिका ''क्या आप उस आत्मा से परिपूर्ण जीवन की अदभुत खोज कर चुके हैं ?'' के द्वारा बाँटने के लिये तैयार रहें।

झ. निर्णय लेने का अवसर दें

कभी किसी व्यक्ति की यह जाँच करने का प्रयास न करें कि वह व्यक्ति प्रार्थना करने या मसीह को ग्रहण करने या फिर पवित्र आत्मा से भर जाने के लिये तैयार है भी या नहीं; उसे स्वयं ऐसा करने के लिये अवसर प्रदान करें। क्योंकि कुछ लोग उस समय पर प्रार्थना करना चाहेंगे जब उन्हें प्रभु यीशु मसीह को उनका उद्धारकर्ता या उनके जीवन का प्रभु होने के लिये निश्चित अवसर प्रदान किया गया होगा।

ञ. उन्नति की चुनौती

हमेशा ऐसे लोगों को जो अपने कत्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं हैं उन्हें अपनी कलीसिया में जीवन समूह में आमन्त्रित करें। अच्छा रहेगा कि आप उन्हें एक-से एक प्रशिक्षण में सहभागिता के लिये बुलाऐं। आप यह कह सकते हैं: **''हम बहुत खुश हैं कि आपने यह निर्णय लिया। अब यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने इस नये जीवन का पूरी भरपूरी से आनन्द उठायें। हमारे इस नये जीवन का पूरी भरपूरी से आनन्द उठायें। हमारे पास आपकी उन्नति के लिये दो अवसर हैं। पहला है जीवन समूह जहाँ आप नये मित्रों से मिलेंगे। और दूसरा है एक से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम, जहाँ आप मसीही जीवन जीना सीखेंगे।** प्रत्येक सेवकाई के लिए अपने व्यक्तिगत उत्साह को अभिव्यक्त करें। यदि सम्भव हो तो उन्हें अपने खुद के जीवन समूह में आमन्त्रित करें।

ट. प्रार्थना

अपनी भेंटवार्ता का समापन एक छोटी सी प्रार्थना के साथ करें। उनके घर, परिवार तथा अन्य विषयों पर प्रार्थना करें।

इस भेंटवार्ता को रिपोर्ट में लिखकर अपने जीवन समूह अगुवे या भेंटवार्ता के सह-सम्पादक को सुपुर्त कर दें।

पूछें ''क्या आप अपने आत्मिक जीवन को लेकर सुनिश्चित हैं कि यदि आज आपकी मृत्यु हो जाये, तब आप स्वर्ग के राज्य में जायेंगे?''

व्यक्ति का उत्तर ''नहीं''

कहें, ''मुझे इस छोटी पुस्तिका को आपके साथ बाँटने दें, यह बताती है कि किस प्रकार आप सुनिश्चित हो सकते हैं।''
सुसमाचार की छोटी किताब से बाँटें

व्यक्ति का जवाब ''हाँ''

कहें, ''बढ़िया है! मुझे आपसे एक और प्रश्न पूछना है, ''मान लें कि आज आपका देहान्त हो जाता है और मृत्यु के बाद आप परमेश्वर के सामने खड़े हैं, और वह आपसे पूछता है ''मैं तुम्हें अपने स्वर्गीय राज्य में क्यों आने दूं?'' तब आप क्या कहेंगे?''

व्यक्ति कुछ और प्रतिक्रिया करता है

व्यक्ति उत्तर देता है, ''मैं प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन के उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण कर चुका हूँ।'' (सिर्फ यही एक सही प्रतिक्रिया है, फिर चाहे यह बिल्कुल इन्हीं शब्दों में न कहा गया हो।)

कहें, ''मैं इस छोटी पुस्तिका से आपके साथ बांटना चाहता हूँ ताकि आप जानें कि किस प्रकार आप सुनिश्चित हो सकते हैं।'' सुसमाचार की छोटी किताब से बाँटें

कहें, ''यह बहुत अच्छी बात है। कृपया हमें बतायें कि यह सब कैसे हुआ?'' जब व्यक्ति अपनी बातों को बता चुके, तब पूछें: ''क्या आप इस छोटी पुस्तिका से परिचित हो चुके हैं?'' (उसे उस छोटी सुसमाचार पुस्तिका को दिखाएें) ''क्या मैं कुछ बातें आपके साथ कर सकता हूँ और बता सकता हूँ कि कैसे आप इसका प्रयोग दूसरों को मसीह के बारे में बताने के लिए कर सकते हैं।''

या...

यदि यह स्पष्ट है कि वह व्यक्ति मसीही है परन्तु वह हारा हुआ है या एक विजयी जीवन नहीं जी रहा है, तब कहें, ''मुझे एक मूलभूत सच्चाई को आपको बताने की अनुमति दें, जो हमारी कलीसिया में आत्मा से परिपूर्ण जीवन के बारे में बतायी गयी।'' या ''क्या मैं आपके समक्ष अपने जीवन के एक महान विचार को रख सकता हूँ, आत्मा से परिपूर्ण जीवन का विचार?'' ''क्या आपने: ...?'' छोटी पुस्तिका से बाँटें।

अध्याय चार के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को पूरा करने के लिए: (समाप्त होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. अध्याय चार की समस्त अध्ययन सामग्री पढ़ें।

❑ 2. सम्पूर्ण सुसमाचार पुस्तिका पर आधारित अभिनय करने को तैयार रहें।

❑ 3. बिन्दू चार पर दिये प्रश्नों का अभ्यास करें।

❑ 4. बिन्दू चार को कण्ठस्थ करें।

शिक्षक के साथ समाप्त करें

❑ 1. अध्याय चार को पुनः दोहरायें।

❑ 2. बिन्दू चार को मन ही मन दोहरायें।

❑ 3. सुसमाचार पुस्तिका पर नाटक करें।

❑ 4. चौथे बिन्दू के प्रश्नों पर साथ मिलकर चर्चा करें।

❑ 5. कलीसिया के किसी सदस्य के साथ सत्र पांच पर बात करने हेतु समय नियुक्त करने के लिए फोन करें।

प्रार्थना का समय

❑ 6. प्रार्थना की सूची में से एक व्यक्ति को सुसमाचार सुनाने के लिए योजना बनायें तथा प्रार्थना करें।

____

____

मैं इस हफ्ते ______________________________

____

____

______________________________ के लिए प्रार्थना चाहता हूँ।

हमारे नियुक्त समय के लिए प्रार्थना करें।
जब हम अपना प्रशिक्षण समाप्त कर लें तब कौन प्रशिक्षण देगा, इस विषय पर चर्चा व प्रार्थना करें।

❑ 7. ''अध्याय पाँच के मूल्यांकन'' पर पुनः नज़र डालें। अगली बार मिलने से पूर्व 'तैयारी' के सारे कार्य खत्म करे लें।

प्रचारकीय मुलाकातः

❑ 8. एक साथ मिलकर अपना परिचय दें तथा मित्रता स्थापित करें।

❑ 9. प्रशिक्षक पर ध्यान दें जब वह

- उसका / उसकी गवाही प्रस्तुत करती है / करता है।
- कुरदने वाले प्रश्न करें।

❑ 10. विद्यार्थी सुसमाचार या आत्मा से भरा संदेश प्रचार करें।

❑ 11. प्रशिक्षक पर ध्यान दें जब वह

- उन्हें जीवन समूह में आने के लिए आमन्त्रित करते हैं। (छोटा समूह तथा एक से एक को प्रशिक्षण में)
- इस मुलाकात को प्रार्थना के साथ समाप्त करें।
- किसी व्यक्ति से मुलाकात करने वाले लेखे को भरें। (यह लेखा जीवन समूह अगुवे या भ्रमण कोरडीनेटर को दें)

सामर्थी वक्तव्य

अध्याय 4
प्रचार करने के लिए एक सामर्थी संदेश

व्यक्तिगत विकास

सुसमाचार का अर्थ है ''शुभ-सन्देश''

जब हम सुसमाचार प्रचार करते हैं तो हम आज तक की हुई घटनाओं में सर्वोत्तम खबर की घोषणा कर रहे हैं। यह एक आशा का संदेश है जो परमेश्वर की शान्ति को प्रस्तुत करता है। जितने भी लोग अभी तक परमेश्वर के ज्ञान से रहित हैं और जिन्होंने परमेश्वर को अपना उद्धारकर्ता करके ग्रहण नहीं किया है यह अवश्य ही उनके लिए ''**शुभ-समाचार**'' है। जब हम सुसमाचार प्रस्तुत कर रहे हैं तो हम उनके सम्मुख एक व्यक्ति अर्थात प्रभु यीशु मसीह को प्रस्तुत कर रहे हैं न कि किसी योजना को।

पौलुस की गवाही का विषय क्या था?

1 कुरिन्थियों 1:23, 24 ______________________________

____

यीशु मसीह की ईश्वरियता के सन्दर्भ में कुलुस्सियों 1:15-17; 2:9,
इब्रानियो 1:3,8 यूहन्ना 10:30; 14:9,10 को पढ़ें।

जब आप मसीह को ग्रहण करते हैं तो आप सम्पूर्ण नये जीवन को प्राप्त करते हैं- अनन्त जीवन- उस प्रकार का जीवन जैसा परमेश्वर के पास है। जब यीशु आपके जीवन में आते हैं तो वह अपने सामर्थ तथा सम्पूर्ण गुणों के साथ आपके जीवन में प्रवेश करते हैं।

2 कुरिन्थियों 5:17 को पढ़ें, क्या बीत गया है? ______________________________

क्या नया हो गया है? ______________________________

कुछ चीजों की सूची बनायें जो आपके जीवन में नयी हो गयी हैं: ______________

____

____

क्या यह ऐसे बदलाब हैं जो दूसरे लोग भी अपने जीवन में चाहेंगे? ______________

जब यीशु मसीह, पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर आपके जीवन में होकर अपना आलौकिक जीवन आप में जीते हैं तो उसका क्या परिणाम होगा? गलातियों 5:22, 23 को पढ़ें तथा जीवन के उन गुणों की सूची बनायें जो वह आप में उत्पन्न करेगा।

इसलिए सुसमाचार को ''**शुभ-समाचार**'' कहा गया है।

संसार को आज बहुतायत से इस ''**शुभ-समाचार**'' की आवश्यकता है। जिन लोगों के बीच हम इसे बाँटते हैं उनके लिये यह ज़िन्दगी और मौत का सवाल है, इसलिए **हमें सतर्क होना चाहिये कि हम इस शुभ-समाचार को सरल व स्पष्ट तरीके से बाटें।** हमें इस सुसमाचार को बार-बार बाँटने की आवश्यकता है क्योंकि बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने कभी भी यीशु की सच्चाई को नहीं सुना।

आप रोमियों 10:14,15 का प्रतिउत्तर कैसे देते हैं?

सुसमाचार क्या है?

सुसमाचार पुस्तिका का निर्माण संदेश को सरल व स्पष्ट रूप से बाँटने के लिए किया गया है। प्रत्येक बिन्दू को मन से लिखे तथा प्रत्येक के लिए एक संगत पद भी दें।

एक

दो

तीन

चार

लोगों से सकारात्मक प्रत्युत्तर की अपेक्षा करें

बहुत से मसीही लोग ऐसा विचार करते हैं कि यदि वह अपनी सादगी किसी के साथ बाँटेंगे तो शायद उन्हें कुछ ठोकर लगे जिससे शायद उनकी दोस्ती खत्म हो सकती है। जबकि जिसको आप सुसमाचार सुनाते हो उनमें से सभी पहली बार में ही यीशु को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हो जाते हैं, जबकि बहुत से लोग बहुत धन्यवादित होते हैं कि आप ने उनका ख़याल किया और उन्हें परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताया।

आपका स्वभाव बहुत महत्वपूर्ण है! लोगों से सकारात्मक प्रत्युत्तर की अपेक्षा करें परन्तु यह आपकी योग्यता पर आधारित नहीं है परन्तु परमेश्वर पर आपके भरोसे, उसके प्रेम, उसकी सामर्थ, उसकी ईश्वरीयता तथा उसके वायदों पर आधारित है।

अपने शब्दों में लिखें कि 2 पतरस 3:9 आपके लिए क्या मायने रखता है।

हम लोगों से प्रत्युत्तर की अपेक्षा कर सकते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के द्वारा उन्हें बताने के लिए भेजे गये हैं। यीशु ने हमें चेले बनाने की आज्ञा दी है। मत्ती 19:20 में लिखा है *''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिए जाओ ...।''* हमें किसी और व्यक्ति की अनुमति की आवश्यकता नहीं है हमें स्वयं परमेश्वर ने जाने की आज्ञा दी है।

यीशु ने अपनी आज्ञा को प्रतिज्ञा के साथ खत्म किया, *''देखो मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे साथ हूँ।''* यही वायदा आज भी हमारे साथ ठीक इसी प्रकार से बना है और हम यह जानते हुए भरोसे के साथ **जा** सकते हैं कि परमेश्वर हमारी विश्वास योग्य साक्षी को आदर देगा।

प्रारम्भिक मसीहियों के समान यदि हियाव के साथ हम अपनी गवाही को बाँटते हैं तो हम भी संसार को बदलने वाले अनुभव करेंगे।

विश्वास के साथ अपने कदम को बढ़ायें और देखें कि परमेश्वर आपके द्वारा क्या करेगा!

व्यवहारिक प्रशिक्षण

सुसमाचार पुस्तिका से बताना

व्यक्ति को यीशु मसीह को ग्रहण करने हेतु प्रार्थना करने में उत्साहित कर रहे हैं।

क. हमेशा पूछें

प्रार्थना को पढ़ने के पश्चात, प्रश्न पूछें ''**क्या आप इस प्रार्थना को करके मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करना चाहेगें ?**'' इस प्रश्न को पूछने के द्वारा आप किसी व्यक्ति को यीशु मसीह को ग्रहण करने का आमन्त्रण दे रहे हैं।

यदि व्यक्ति सकारात्मक ढंग से जवाब देता है:

ख. व्यक्ति को प्रार्थना में अगुवाई करने का प्रस्ताव रखें

अ. कहें ''**मैं इस प्रार्थना के दौरान एक-एक वाक्य बोलूंगा और आप उसे यीशु को ग्रहण करने के लिए दोहराइये।**''

आ. यदि वह व्यक्ति प्रार्थना को दोहराने में कठिनाई को महसूस करता है तो उसे खुद ज़ोर से प्रार्थना करने को कहें।

इ. कुछ लोग जोर से प्रार्थना करने में, प्रार्थना को दोहराने में या खुद ज़ोर से प्रार्थना करने में हिचकिचाते हैं। वे चुपचाप प्रार्थना करने को तैयार होंगे। उन्हें ऐसा करने के लिए उत्साहित करें।

व्यक्ति की यह जानने में सहायता करें कि मसीह उनके जीवन में है

एक नये विश्वासी के लिए यह जानना कि मसीह उसके जीवन में है अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कई लोग कहते हैं कि यीशु मेरे बगल में हैं, या वह मेरे नजदीक है, या ''वह मेरे जीवन में है।'' उसे यह जानना आवश्यक है कि यदि वह विश्वास के साथ प्रार्थना करता है, तो परमेश्वर जवाब देता है और यीशु उसमें रहता है। **याद रखें कि कोई भी व्यक्ति किसी प्रार्थना करने के द्वारा नहीं वरन विश्वास के द्वारा नया जन्म पाता है, इस विश्वास के साथ कि जब उसने मसीह यीशु को आमन्त्रित किया तो यीशु उसके जीवन में आये।**

क. कैसे जानें कि मसीह आपके जीवन में है

पूछें:

1. **क्या आपने यीशु को अपने जीवन में ग्रहण किया ?** ''उत्तर का इंतजार करें। अगर आपको कोई जवाब नहीं मिलता तो पूछें: ''**जब आपने प्रार्थना की थी तो क्या आप गम्भीर थे ?**''
2. प्रकाशितवाक्य 3:20 के अनुसार ''**क्या मसीह आपके जीवन में आये ?**'' चौथे बिन्दू को पलटे तथा प्रकाशितवाक्य 3:20 का हवाला देते हुए एक बार फिर से प्रश्न पूछें।

3. ''**मसीह ने कहा कि वह आपके जीवन में आयेगा। क्या वह आपको बहकायेगा ?**'' उत्तर का इन्तज़ार करें।
4. ''**आप कैसे जानते हैं कि परमेश्वर ने आपकी प्रार्थनाओं का जबाव दिया है ?**'' (वह कहता है यदि मैं गम्भीरता से उसे बुलाऊंगा तो वह आयेगा) परमेश्वर झूठ नहीं बोलता।

ख. जो लोग मसीह को ग्रहण करते हैं उन्हें बाइबल अनन्त जीवन का वायदा देती है।

जब 1 यूहन्ना 5:11-13 में से बताये तो ''**पास**'' और ''**जाने**'' शब्द पर ज़ोर दें जो 12 और 13 वचन में है।

ग. अपने एहसास पर निर्भर न करें

अपने एहसास पर निर्भर न करने के महत्व को समझायें। पूछें ''**क्या कभी आपने महसूस किया कि परमेश्वर दूर है, वह कहां होगा ?**'' उसे याद दिलायें कि वह मसीह के उसके जीवन में होने का धन्यवाद करें।

घ. अपने विश्वास की उद्घोषणा करें

सलाह दें कि वह आपके साथ मिलकर प्रार्थना करें तथा परमेश्वर के कार्यों के लिए उसका धन्यवाद दें। धन्यवाद की प्रार्थना में किसी व्यक्ति अगुवाई करते समय उसे समझा दे कि पहले आप प्रार्थना करेंगे। तब आप खुद एक छोटी व सरल धन्यवाद की प्रार्थना करें। आपके प्रार्थना करने के उपरान्त उससे भी प्रार्थना करने को कहें। आप कह सकते हैं कि ''**आप परमेश्वर को आपके जीवन में आने के लिए अपने शब्दों में धन्यवाद कर सकते हैं।**''

ड़. मसीही वृद्धि

लगातार पुस्तिका के पिछले पृष्ट से पढ़ते रहे जो यह दर्शाता है कि कैसे कोई मसीहियत में आगे बढ़ सकता है। उसे किसी कलीसिया में जाने के लिए उत्साहित करें (अपने चर्च में या जो चर्च उसको नजदीक पड़े ताकि वह विश्वासियों की संगति में जाकर मसीह में बढ़ सके)। उस व्यक्ति को उत्साहित करें कि वह इस पुस्तिका को अपने मित्र या परिवार जनों के साथ बाँटे।

जो व्यक्ति प्रार्थना करना नहीं चाहता, पुस्तक से प्रार्थना पढ़ने के पश्चात उसकी मसीह को ग्रहण करने में सहायता करना

1. सकारात्मक व प्रेमी स्वभाव को बनाये रखें। जब आप यीशु को ग्रहण करने का प्रस्ताव रखते हैं तो हर कोई तैयार नहीं हो जाता। व्यक्ति के प्रतिउत्तर की परवाह न करते हुए उसके साथ प्यार से मित्रता के साथ व आदर से पेश आयें।

2. आप कह सकते हैं **''मैं आपको दिखाता हूँ कि जब आप यीशु को अपने जीवन में बुलाते हैं तो क्या होगा''**। निश्चयता सम्बन्धित प्रष्ठ का बखान करें तथा व्यक्ति को पुन: प्रार्थना करने का अवसर प्रदान करें। आप कह सकते हैं कि **''अब आप अधिक स्पष्टता से जानते हैं कि यीशु मसीह को अपने जीवन में स्वीकार करने का क्या अर्थ होता है। क्या आप यह प्रार्थना करके मसीह को ग्रहण करना चाहेंगे?''**
3. जो व्यक्ति अपने जीवन में मसीह को ग्रहण करने को तैयार नहीं है उसके प्रति उत्तर में आपको सुझाव यह है कि आप अपने जीवन की गवाही उसे पुन: बतायें कि किस प्रकार से आपने मसीह को जाना तथा उसका क्या परिणाम रहा।
4. हो सकता है आप पूछना चाहें **''क्या कारण है कि आप यीशु को अभी अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं कर सकते?''**
5. यदि वह व्यक्ति अभी भी प्रार्थना करना नहीं चाहता तो आप कहें, **''यह एक ऐसा निर्णय है, जिसके विषय में मैं निश्चय हूँ कि आप बहुत जल्द अपनायेंगे।''** उसे उत्साहित करें कि इस पुस्तिका को पढ़ने के उपरान्त वह प्रार्थना करें। सुसमाचार पुस्तिका को उसके पास छोड़ दें।
6. इसे यूहन्ना सुसमाचार पढ़ने के लिए उत्साहित करें।

उस व्यक्ति की सहायता करना जो कहता है, ''मैं इस प्रकार की प्रार्थना प्रत्येक दिन करता हूँ।''

1. इफिसियों 2:8,9 को पढें और उसे समझायें कि हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं न कि प्रार्थना के द्वारा। प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में आमन्त्रित करना मुझे उद्धार नहीं देता-परन्तु यह विश्वास करने से कि जब मैंने उसे बुलाया तो वह मेरे भीतर आया।
2. यदि आवश्यकता पड़े, तो उस व्यक्ति से कहें कि आप इस प्रार्थना को अन्तिम बार कहे और **विश्वास करें** कि यीशु अपने वायदे को पूरा करेगा और उसके जीवन में आयेगा। उसके बाद इस व्यक्ति को सुझाव दें कि अब वह प्रत्येक दिन यीशु को उसके जीवन में आने के लिए धन्यवाद दे।

   इन पदों का हवाला दें-
   प्रकाशितवाक्य 3:20 - जब आप विश्वास से बुलाते हैं तो मसीह आता है।
   इब्रानियों 13:5 - वह आपको कभी नहीं छोड़ेगा।
   1 यूहन्ना 5:13 - उसने अपना वचन दिया *''ताकि आप जाने''*।

जब कोई व्यक्ति पहली मुलाकात के दौरान मसीह को ग्रहण नहीं करता तो, उसे स्पष्टता से अपनी उपलब्धता का भरोसा दिलायें। यदि वह और बात करना चाहता है तो दुबारा मिलने का प्रस्ताव रखें। उसके उद्वार के लिए निरन्तर प्रार्थना करें।

आप चाहें तो उसे पूर्व-मसीही बाइबल अध्ययन पर बुला सकते हैं।

अध्याय पांच के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिए: (समाप्त होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. अध्याय पाँच की सम्पूर्ण शिक्षा सामग्री को पढ़ें।

❑ 2. ''क्या आपने आत्मिक जीवन की अदभुत खोज की है'' पुस्तक से अभिनय करने को तैयार रहें।

❑ 3. एक मित्र के पास भेंटवार्ता के समय का अभिनय करें, खास तौर पर वचन दिये जाने के समय का।

प्रशिक्षक के साथ समाप्त करें

❑ 1. अध्याय पाँच को पुन: दोहराएं।

❑ 2. प्रत्येक जन बाँटे कि वह किस प्रकार से आत्मा से पूर्ण जीवन को समझ पाया और पुस्तिका पवित्र आत्मा से अभिनय करें।

❑ 3. एक मित्र के पास भेंटवार्ता के समय का अभिनय करें, खास तौर पर वचन दिये जाने के समय का।

❑ 4. सत्र छ: के लिए अपने मित्र के साथ समय को नियुक्त करें।

❑ 5. आपस में चर्चा करें कि इस हफ्ते में आप किसको प्रशिक्षित करेंगे और उन्हें चुनौती देने की योजना बनायें। (इस सत्र के अन्त में अंकित ''सामर्थी वक्तव्य, एक अवसर'' का इस्तेमाल करें।) निम्नलिखित हमारे लक्ष्यों की पूर्ति करें (अगर सन्देह है तो पेन्सिल का, निश्चित होने पर पैन का प्रयोग करें)

प्रशिक्षण के लक्ष्य

प्रार्थना का समय

❑ 6. मैं इस हफ्ते ____________________

____

____

प्रार्थना चाहता हूँ।

आप की मुलाकात के लिए मिलकर प्रार्थना करें।

जिन लोगों को आप इस प्रशिक्षण को लेने के लिए चुनौती देंगे उनके लिए प्रार्थना करें।

❑ 7. ''अध्याय छ: के मूल्यांकन पर'' पुन: नजर डालें, अगली बार मिलने से पूर्व सारी तैयारियां पूरी कर लें।

प्रचारकीय भ्रमण

❑ 8. एक साथ अपने को परिचित करें व उनसे घनिष्ठता बढ़ायें।

❑ 9. कलीसिया के सदस्य के यहाँ हो रही मुलाकात में आप हर क्षेत्र में परखे जायें।

- गवाही बताते समय।
- कुरेदने वाले प्रश्न
- सुसमाचार पुस्तिका या आत्मा से भरे जीवन के संदेश से बाँटे।
- उन्हें जीवन समूह में आने का आमन्त्रण दें (छोटे समूह तथा एक से एक को प्रशिक्षण में)
- मेहमान से मुलाकात के लेखे को पूर्ण करें। (यह रिपोर्ट आपके जीवन समूह अगुवे के हाथ में या सह-आयोजक के हाथ में सौंपी जानी चहिए।)

अध्याय 5

एक मित्र के साथ सुसमाचार सुनाने का भरोसा

व्यक्तिगत विकास

बहुतायत के जीवन को जीना व व्यक्त करना

जब आप मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धार कर्ता करके ग्रहण करते हैं तो आप बिल्कुल नये रोमांचक जगत में प्रवेश करते हैं। यीशु ने यूहन्ना 10:10 में कहा, *''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पायें और बहुतायत का जीवन पायें।''* 2 कुरिन्थियों 5:17 कहता है, *''इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गयी हैं देखे सब बातें नई हो गयी हैं।''* दुर्भाग्य से बहुत से मसीही आज इस बात को नहीं समझ पाते हैं कि एक नई सृष्टि होने का क्या अर्थ होता है। अधिकतर वह अपनी ताकत से मसीही जीवन को जीना चाहते हैं और समय समय पर असफल होते हैं। कई लोग इस प्रकार से अपने जीवन में इतना निराश और हताश हो चुके हैं कि वह इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि मसीह की अपेक्षाकृत जीवन निर्वाह करना असम्भव है।

जबकि यह सत्य है कि हम मसीही जीवन नहीं जी सकते हैं परन्तु यह भी सत्य है कि यह करना सम्भव भी है। एक मसीही के पास मसीही जीवन जीने के सारे साधन होंगे, परन्तु शायद वह यह नहीं जानता है कि उसका कैसे इस्तेमाल किया जाये। आपके पास एक ऐसा अवसर है कि आप इन्हें बता सकें कि कैसे वह एक ऐसे विजयी जीवन को जी सकते हैं जिससे परमेश्वर को महिमा मिले। इस प्रकार के जीवन की गुणवत्ता वह बहुतायत है जो वह सब के साथ बाँटना चाहेगा। पवित्र आत्मा हमें इसलिए दिया गया है कि वह हमें दूसरों के सम्मुख साक्षी बनने में सामर्थ प्रदान करें।

बहुतायत का जीवन जीना

क्या आप निश्चित रूप से जानते हैं कि पवित्र आत्मा अगुवाई व सामर्थ प्रदान कर रहा है अभी आपका जीवन? ____________________

कैसे आप जानते हैं? ____________________

____

____

जैसे मसीह को उद्धारकर्ता करके ग्रहण करना, पवित्र आत्मा से भरना उस तरह कोई प्रार्थना करने के विषय नहीं हैं वरन विश्वास से उद्घोषणा करने का विषय है कि परमेश्वर ने हमारी प्रार्थना का जवाब दिया है।

इस तरह जीयें जैसे वह नियन्त्रण में है, क्योंकि उसने कहा है कि वह नियन्त्रण करेगा यदि आप विश्वास द्वारा उसके नियन्त्रण का एलान करें।

''क्या आपने आत्मिक जीवन की खोज की है'' पुस्तक को पढ़ें।

अपने शिक्षक के सम्मुख इसे व्यक्त करने को तैयार रहे कि कैसे आप आत्मा से पूर्ण जीवन को समझ पाये। इसके अलावा अपने प्रशिक्षक के सामने इस पुस्तक को पढ़े व इस पर चर्चा करें।

आत्मा से पूर्ण जीवन संदेश का प्रचार कब करें

यह हमेशा उचित है कि आप पहले सुसमाचार पुस्तिका से ही प्रचार करें जब तक कि आपको यह निश्चय नहीं हो जाता कि यह परिवार मसीही है। जब आप सुसमाचार पुस्तिका से बांट रहे हैं और आपको यह पता चल जाता है कि वह व्यक्ति मसीही है तो उसे अपना विश्वास दूसरों में बाँटने के लिए प्रोत्साहित करें। परन्तु वह हारा हुआ या निराशा प्रतीत होता है तो विषय बदलकर पवित्र आत्मा की पुस्तक का सहारा लें।

क्या बात करें

आप कह सकते हैं, ''चलिये मैं इस पुस्तक को आपको सुनाता हूँ। यह सच में अद्‌भुत है। इसमें दर्शाया गया है कि आप कैसे बहुतायत से भरे मसीही जीवन को जी सकते हैं।'' उस पुस्तक को पढ़ें। सामान्य रूप से बिना किसी टीका टिप्पणी के उसे पढ़ें। पृष्ठ नौ से पहले आप पूछे कैसे एक व्यक्ति और आत्मा से भर सकता है?'' पृष्ठ 1 व 2 तथा तीन को पलटें और पूछें वर्तमान में आपका जीवन इन तीनों चक्रों में से किसके समान हैं।

यदि वह कहता है अन्तिम मनुष्य के चित्र के समान है तो लगातार पेज नॉ को पढ़ते रहे ताकि उसे पता चले कि दूसरों में कैसे अपने विश्वास को बाँटना है।

यदि वह सांसारिक व्यक्ति मनुष्य के चित्र के समान है तो, पेज नौ को लगातार पढ़ें। और अवसर दें ताकि पवित्र आत्मा को अपने जीवन का नियन्त्रणकर्ता होने के लिए आमन्त्रित कर सकें।

बाद के कार्य

उसके उत्तर को चिन्ता किये बगैर, व्यक्ति को अपने जीवन समूह में आमन्त्रित करें (छोटे समूह या एक से एक को प्रशिक्षण में) यह सबसे उचित रहेगा।

बाधाओं पर जय प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ

छः ऐसी बाधायें नीचे लिखी गयी हैं जो मसीह के प्रचार में सर्वाधिक प्रभाव डालती हैं। प्रत्येक बाधाओं के बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है पढ़ें। अपने ही शब्दों में लिखें कि परमेश्वर आपसे बाधाओं पर जय पाने के विषय में क्या कहता है।

बाधाएं	**परमेश्वर का वचन**	**मेरा प्रत्युत्तर**
मुझे व्यक्ति को बेहतर जानने की आवश्यकता है।	यूहन्ना 4:7-30, 39 लूका 14:21-23 प्रे० के० काम 8:4,40	
यदि लोग इच्छुक हैं तो वह मुझसे पूछेंगे	2 कुरिन्थियों 4:13 यूहन्ना 20:21 2 कुरिन्थियों 5:28	
कई लोग और परिस्थिती ऐसी है जो आत्मिक बातों को लेकर सीमित हैं	कुलुस्सियों 1:28 प्रे० के काम 5:42 1 थिस्लुनिकियों 2:2-4	
मैं लोगों को ठोकर खिलाने से डरता हूँ। शायद मेरी दोस्ती टूट जाये।	प्रेरितो के काम 5:41 2 कुरिन्थियों 4:1,2 लूका 9:26	
मैं इस योग्य नहीं हूँ कोई दूसरा जन जाकर उस स्त्री से बात करे।	2 कुरिन्थियों 3:5 मत्ती 4:19 यूहन्ना 15:16 2 कुरिन्थियों 5:18	
वह रूचि नहीं लेगा। क्योंकि वह बहुत सफल है।	मत्ती 9:37 2 कुरिन्थियों 5:16 यूहन्ना 4:35	

व्यवहारिक प्रशिक्षण

एक मित्र के साथ बांटने का भरोसा

पढ़ें लूका 10:25–37

एक वकील यीशु के पास आकर पूछने लगा *''हे रब्बी, अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिए मैं क्या करूं?''* यीशु ने कहा तू खुद मूसा की व्यवस्था के अनुसार इसका जवाब दे। 27 वचन में अंकित उसके जवाब को लिखें।

पद 29 कहता है: *''परन्तु उसने अपने को धर्मी ठहराने के लिए यीशु से पूछा, कि मेरा पड़ोसी कौन है?''* इस घटना की व्याख्या करने के लिए यीशु ने भले सामरी की कहानी सुनाई।

इस कहानी के अनुसार आपका पड़ोसी कौन है।

किस बात ने परदेशी को सामरी की सहायता करने के लिए प्रेरित किया?

मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य की सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि वह प्रेम करे व प्रेम पाये। प्रभु यीशु मसीह हमें प्रेम देते हैं और सच कहें तो सर्वोत्तम प्रेम, और वह यह चाहते हैं कि हम इस प्रेम को जाकर दूसरों में बाँटें। इनमें से बहुत से लोग परदेशी होंगे परन्तु बहुत से ऐसे होंगे जो हमारे घनिष्ट हैं। हमने अब सीख लिया है और अभ्यास भी किया है कि किस प्रकार से हम कलीसिया के सदस्यों की घर पर भेंटवार्ता कर सकते हैं। आइये अब हम इस बात को देखें कि कैसे हम अपने मित्र के साथ सुसमाचार बाँट सकते हैं। आपके पास बहुत से ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आप अपने मित्रों व परिवार जनों के साथ अपने विश्वास को बाँट सकें। आपको भरोसे के साथ प्रभावशाली ढंग से बाँटने के लिए प्रशिक्षण व अभ्यास की आवश्यकता पड़ेगी।

हमारे भ्रमण का तरीका बिल्कुल वैसा ही होगा जैसा हम पहले कर रहे थे। हम थोड़ा बहुत आवश्यकतानुसार बदलाव कर सकते हैं।

अ. मिलने का समय नियुक्त करें

1. अपनी प्रार्थना सूचि से एक व्यक्ति का चुनाव करें (यदि सम्भव हो तो)
2. उनके घर, कार्यालय या रैस्टोरेन्ट में मिलने का प्रबन्ध करें।

व्यक्ति से मिलकर या फोन के द्वारा नियुक्ति करें। आप कह सकते हैं ''**नमस्ते ______, मैं ______ बोल रहा हूँ। आप कैसे हैं?** (किसी सामान्य बात पर कुछ समय बात करें) **मेरा फोन करने का कारण ______ कि मैं और मेरा मित्र ______ चार बिन्दुओं की रूपरेखा को प्रस्तुत करना सीख रहे हैं कि परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप में जाना जाये। उसमें से एक अभ्यास यह है कि हमें अपने मित्रों के साथ इसे व्यक्त करना है। हम इसे आपके साथ बाँटना चाहेंगे। आपको कैसा लगेगा यदि ______ की शाम ______ बजे ______ हम एक चाय या कॉफी पियें? मैं भुगतान करूँगा।''**

(यदि वह फिर भी तैयार नहीं होता है तो किसी और दिन था समय का प्रस्ताव रखें। यदि सम्भव हो तो कहें: ''**बहुत अच्छा, हम आपसे शाम ______ बजे ______ पर मिलेंगे।''**)

या

''**नमस्ते ______, मैं ______ हूँ, आप कैसे हैं?** (कुछ समान्य बात पर चर्चा करें) **______, मेरे पास कुछ खास बात है और उसे आपके साथ बाँटना चाहता हूँ। मेरा मित्र ______, और चार-बिन्दुओं की रूपरेखा का प्रशिक्षण ले रहे हैं जो बताते हैं कि हम परमेश्वर को किस तरह से व्यक्तिगत रूप में जान सकते हैं। मैं नहीं जानता कि आप इसमें इच्छुक होंगे या नहीं, परन्तु फिर एक कप चाय या कॉफी पीते पीते मैं इसे आपके साथ बाँटना चाहता हूँ। कल सुबह ______ बजे ______ पर आपके लिए कैसा रहेगा? हम आपके घर आ सकते हैं या फिर ______ बजे रैस्टोरेन्ट में मिलते हैं।**

(यदि वह तैयार नहीं है तो कोई और समय या जगह चुनें। यदि सम्भव हो तो कहें: ''**बहुत अच्छा हम आपसे ______ बजे आपके घर पर मिलेंगे।''**)

आ. प्रार्थना (जैसा अध्याय तीन में किया था)

इ. आने का तरीका (ठीक अध्याय तीन के अनुसार)

ई. सम्बन्ध स्थापित करें (अगर घर जा रहे हैं तो ठीक पहले के समान)

जब आप किसी होटल में कॉफी पीने के लिए मिलें तो अपने साथी का परिचय अपने मित्र के साथ करें। उनको जानने के पश्चात आप कह सकते हैं ''**हम आज आपसे मिलकर बहुत**

खुश हुए ———— ।'' उन्हें बतायें कि किस प्रकार आप और आपके मित्र चर्च में एक दूसरे को जान सकें।

उ. उन्हें अपनी कलीसिया की सूचनाऐं, देने से बचें। ''ऊ'' की तरफ बढ़ें।

ध्यान दें: *इस समय दल का केवल एक ही जन बातें करे व अगुवाई करे, और दूसरे लोग चुपचाप प्रार्थना करें। बाकी की सारी मुलाकातें भी ठीक उसी प्रकार होंगी जैसे अध्याय तीन में दी गयी हैं।*

ऊ. व्यक्तिगत गवाही

ए. जानकारी हासिल करने वाले प्रश्न

ऐ. सन्देश व्यक्त करें

ओ. निर्णय लेने का अवसर दें

औ. वृद्धि के लिए चुनौती दें (यदि इच्छुक दिखें तो)

अं. प्रार्थना करें (यदि उचित हो)

सामर्थी वक्तव्य

एक से एक को एक अवसर

वर्तमान में अधिकतर मसीही उस प्रकार आलौकिक जीवन व वैसे सामर्थ व सम्पूर्णता का अनुभव करना चाहेंगे जिसका ज़िक्र नये नियम की पत्रिकाओं में किया गया है। यह उनके लिए कोई दिखावा या प्रदर्शन मात्र नहीं था परन्तु यह उस परिवर्तित जीवन का परिणाम था जिसके बारे में उन्होंने लिखा कि ''मसीह उनमें जीवित हैं''। जैसे हम परमेश्वर के वचन का जवाब देते हैं वहीं जीवन आज भी हमारे लिए उपलब्ध है।

परमेश्वर की योजना

परमेश्वर की योजना प्रत्येक विश्वासी के लिए यह है कि वह उसके लिए गवाह बने। आप उसके उस सार्वभौमिक कार्य का एक प्रमुख हिस्सा हैं जिसके प्रति वह चाहता है कि उसके लोग इस कार्य को इस युग में पूरा करें। क्या इससे भी बढ़कर कोई कार्य है?

परमेश्वर की सामर्थ

परमेश्वर का वायदा: *''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे।''*

–प्रेरितों के काम 1:8

सामर्थी वक्तव्य क्या है?

1. इसमें एक से एक को शिक्षा देने वाले छ: प्रशिक्षण सत्र शामिल हैं जिसका इस्तेमाल एक व्यक्ति किसी दूसरे ऐसे व्यक्ति को शिक्षा देने के लिए करता है जो किसी दूसरे को सिखा सके ।
2. हम आपस में मिलकर हफ्ते में दो घण्टे, अपनी बातें व्यक्त करते, अभ्यास करते, प्रार्थना करते, और नियुक्त लोगों में जाकर सुसमाचार प्रचार करते हैं।

एक से एक को ही क्यों?

1. अल्प–कालीन, एक से एक को प्रचार आसानी से दूसरों में पुन: उत्पादन कर सकता है। (एक से दूसरे व्यक्ति में शिक्षा को आगे बढ़ाने का सबसे सरल तरीका है)
2. लगभग सभी लोग व्यक्तिगत प्रशिक्षण दे सकते हैं। एक पुरुष दूसरे पुरुष, तथा स्त्री दूसरी स्त्री को शिक्षा देते हैं।
3. एक अगुवे के रूप में विकास करने के लिए क्षमता प्रदान करता है।

4. इससे आप अधिक उत्तरदायी बनेंगे।

5. जैसे-जैसे आप प्रभावशाली ढंग से प्रचार कार्य करते हैं इससे आपको मसीह के प्रति अधिक आज्ञाकारी बनने में सहायता मिलती है।

6. आपके पास अवसर होता है कि आप मजबूत मसीही सम्बन्धों को बना सकें।

7. समय सारणी में गुंजाइश होती है कि आप सामर्थी वक्तव्य एक साथ बाँट सकें।

सामर्थी वक्तव्य के लक्ष्यः

1. क्या आपने प्रचार को लेकर कोई दर्शन प्राप्त किया है।

2. अपने भरोसे को पवित्र आत्मा पर लगाये क्योंकि वही गवाह बनने की सामर्थ्य व दिशा प्रदान करता है।

3. दूसरों के सम्मुख किस प्रकार से गवाही को बाँटना है सीखें।

4. मसीह के गवाह बनने के लिए तैयारी करें।

5. नये विश्वासियों की प्रतिक्रिया जानने के लिए योजना बनायें।

6. दूसरों को प्रशिक्षित करने का प्रयास करें (पुनः उत्पादन)

   ''और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दें; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।''

   2 तीमुथियुस 2:2

सामर्थी वक्तव्य में शामिल होने क लिए आपमें क्या योग्यता होनी चाहिये ?

1. मसीह के साथ बढ़ने की इच्छा होनी चाहिये।

2. सीखने की योग्यता-दूसरों से बातचीत के दौरान उनसे सीखने की इच्छा हो।

3. प्रशिक्षण हस्त-पुस्तक को खरीदें।

4. साप्ताहिक सत्रों में नियमित रूप से उपस्थित रहने का समर्पण।

5. कार्यक्रम से समाप्त करने का समपर्ण।

क्या आपने सामर्थी वक्तव्य में जाने का प्रबन्ध कर लिया है ?

क्या मैं आपके लिए प्रबन्ध कर सकता हूँ।

अध्याय छः के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिएः (मैं खत्म होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. अध्याय छः की सम्पूर्ण सामग्री को पढ़ें।

❑ 2. एक मित्र के साथ मुलाकात का अभिनय करने को तैयार रहें।

❑ 3. अपने मित्र के साथ मुलाकात करें।

शिक्षक के साथ समाप्त करें

❑ 1. अध्याय छः पर पुनः नज़र डालें

❑ 2. एक मित्र के साथ मुलाकात की प्रक्रिया का अभिनय करें तथा स्थिति परिवर्तन का अभ्यास करें।

❑ 3. अपने अपेक्षाकृत शिष्यों को बुलाये ताकि वह ''सामर्थी वक्तव्य एक अवसर'' से अपने लिए अलग पहलू प्राप्त करें, और इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए तिथि निर्धारित करें।

प्रार्थना का समय

❑ 4. अपने मित्र के साथ आज मुलाकात के लिए प्रार्थना करें।
मैं इस हफ्ते अपने ____________________

____

____

के लिए प्रार्थना निवेदन करता हूँ।

आगामी समय में जिनको हम प्रशिक्षण देंगे उनके लिए नाम लेकर प्रार्थना करता हूँ।

जैसे-जैसे हम दूसरों में अपने जीवन को प्रवाहित करते हैं उनके साथ मिलकर प्रार्थना करें।

- ❑ 5. एक साथ अपना परिचय दें तथा उनके साथ अच्छा सम्बन्ध स्थापित करें।
- ❑ 6. जब आप मित्र के घर पर मुलाकात करें तो प्रशिक्षक आप पर नज़र रखें।
  - गवाही बाँटें।
  - जानकारी हासिल करने वाले प्रश्न करें।
  - सुसमाचार पुस्तिका या आत्मा से पूर्ण संदेश प्रचार करें।
  - उन्हें जीवन समूह में आने के लिए आमन्त्रित करें (छोटा समूह तथा एक से एक को प्रशिक्षण)
  - मेहमान से लेखे को पूर्ण करें (यह रिपोर्ट आपके जीवन समूह अगुवे के हाथ में या सह-आयोजक के हाथ में सौंपी जानी चाहिए।)

अध्याय 6

लोगों का लोगों तक पहुँचना

व्यक्तिगत विकास

मेरे संसार के लिए दर्शन

इस समय की यह प्रमुख आवश्यकता है कि मसीह यीशु के द्वारा दी गयी उसकी आज्ञा को, जो उसने अपने चेलों को दी, उसे मसीही लोग आज पकड़ सकें *''जाओ और सारे जगत के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो''* मरकुस 16:15

यह महान आज्ञा वास्तव में चेलों के लिए एक चुनौती थी जो वह अपनी सामर्थ्य से कभी पूरा नहीं कर सकते थे। जबकि पवित्र आत्मा स्त्री व पुरुषों के द्वारा अपने कार्य कर रहा था, कि उस शताब्दी में सारे संसार के लोग मसीह यीशु के सुसमाचार को सुन सकें। सुसमाचार ऐसी ज़बरजस्त मेंमने वाली सामर्थ के साथ प्रचार किया गया पागानी, रोमन सम्राट ''उलट पुलट हो गए।''

प्रभु यीशु मसीह व सुसमाचार की सामर्थ आज भी धूमिल नहीं हुई है। फिर भी इक्कीसवीं शताब्दी के मसीहियों का प्रभुत्व उतना नहीं हो सका जितना प्रथम शताब्दि के मसीहियों का था। जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान में जीवित आधे से ज्यादा लोगों ने प्रभु के वचन को नहीं सुना है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कभी लोगों से नहीं कहा कि वह मसीहियों के पास जाए। वरन मसीहियों से कहा कि वह संसार में लोगों के पास जाऐं और सुसमाचार सुनाऐं जो कि एक मात्र ''उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' इस सत्र का उद्देश्य आपको उत्साहित व दिशा प्रदान करना है ताकि आप दूसरों में मसीह का सुसमाचार सुनाने के प्रति अपनी क्षमता को प्रभावशाली बना सके ।

आज अधिकतर मसीही लोग अपने व्यक्तिगत जीवन में पराजय से जूझ रहे हैं, इसलिए उनकी गवाहियां प्रभावित होती है। ज़्यादातर ध्यान आधुनिक समाज के नकारात्मक प्रभाव पर दिया जाता है। परन्तु मसीहि लोग शायद ही सतर्क किए जाते हैं कि किस प्रकार से परमेश्वर उन्हें सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। जिस प्रकार से पौलुस ने स्वयं को इतना अयोग्य समझा कि उसने लिखा *''और मैं निर्बलता और भय के साथ, थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा।''* बहुत से मसीही लोग इस प्रकार के भ्रम के आक्रमण में हैं कि वह समझते हैं कि वह गैर मसीहियों को किसी भी प्रकार से प्रभावित कर सकते हैं। आपको यह समझना बहुत जरूरी है कि किस प्रकार पौलुस ने अपनी हीन भावना से हार नहीं मानी।

उसकी सेवकाई सामर्थ से भरी थी: *''जिसका प्रचार करने हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह ने सिद्ध करके उपस्थित करे। और इसीलिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम करता हूँ।''* आप भी परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किए जा सकते हैं, इसीलिए नहीं कि आप हिम्मतवाले या बुद्धिमान हैं, बल्कि इसलिए कि परमेश्वर आप में कार्य करता है।

दूसरों को प्रभावित करने के सिद्धान्त

कुलुस्सियों 4:2-6 में कौन से तीन ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त दिए गए हैं जिसके द्वारा हम दूसरों को मसीह में प्रभावित कर सकते हैं?

1. ______________________________
2. ______________________________
3. ______________________________

पौलुस का उदहारण

1 कुरिन्थियों 9:19-23 पढ़ें। पौलुस द्वारा प्रमुख प्रभावों की सूची बनायें।

____

____

पौलुस विस्तार पूर्वक अपने प्रभाव की छाप को क्यों छोड़ना चाहता है?

____

____

दूसरों को प्रभावित करने के लिए हमारे कार्य किस प्रकार के हैं?

____

____

सीधे प्रभावित करने के अन्य उदाहरण-

1. इन्द्रियास को यीशु मसीह के पास कौन लेकर आया?
2. यूहन्ना 1:35-42
3. कौन फिलिप को मसीह के पास लेकर आया? यूहन्ना 1:43-49

आपके प्रभाव का क्षेत्र - आपकी सोच से बढ़कर है

आपके प्रभाव का क्षेत्र वह लोग हैं जिन्हें आप जानते हैं तथा वह भी जिन्हें आप भविष्य में जानेंगे। जिन लोगों को आप जानते हैं वह आपके सीधे प्रभाव के क्षेत्र में हैं। जो लोग आपका लक्ष्य हैं हो सकता है कि आप उनसे प्रतिदिन बातचीत करते हों। दूसरों का साथ जबकि

आपका सम्बन्ध महीने में एक बार या साल में एक बार बात करने तक सीमित हो। ऐसे लोग जिनसे आप परिचित नहीं हैं, परन्तु उनसे मिलने की सम्भावना है, उन पर ध्यान केन्द्रित कीजिए। उदाहरण के तौर पर अपने नागरिक क्लब के एक सदस्य या आपके मित्र का एक मित्र, आपकी प्रभाव क्षमता के दायरे में है।

आपके प्रभाव के केन्द्र

ज्यादातर लोग अपने प्रभाव क्षेत्र की सीमाओं को नहीं पहचानते हैं। इस सूत्र का प्रयोग आपके लक्ष्य के दायरे में पाये जाने वाले गैर मसीहियों की संख्या को जानने में किया जा सकता है:

रिश्तेदार + **सह-कर्मी** + **पड़ोसी** + **मित्र** + **जान पहचान वाले**

________ + ________ + ________ + ________ + ________

ऊपर लिखित संख्या का योग: ____________ **(योग अ)**

यदि यह सात लोग प्रभु को ग्रहण करके अपने क्षेत्र में सुसमाचार प्रचार करना प्रारम्भ कर दें, तो अब आप उनके द्वारा बहुत से लोगों को प्रभावित कर सकते हैं।

उपरोक्त (योग अ) x 7 = ____________ **(योग ब)**

(अ) ________ + **(ब)** ________ = ____________

अपने शीघ्र-कार्य करने वाले लोगों को पहचाने

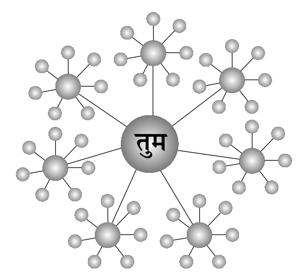

प्रार्थना के साथ में 7 लोगों का चुनाव करें व उनके बीच मसीह का प्रचार करें।

1. ______________ 5. ______________
2. ______________ 6. ______________
3. ______________ 7. ______________
4. ______________

जब इनमें से कोई व्यक्ति मसीह को ग्रहण करता है तो उस व्यक्ति के साथ उसके लक्ष्य (जान पहचान के लोगों) तक पहुँचने में उसकी सहायता करें।

व्यवहारिक प्रशिक्षण

इस संसार तक पहुँचने के लिए रणनीतियों का अभ्यास करें

बहुत से मसीहियों को प्रचारकार्य का नाम सुनते ही डर लगने लगता है। क्यों? ज़्यादातर मसीही एसे हैं जिन्होंने किसी के साथ भी आज तक अपने विश्वास की बातों को नहीं बाँटा। क्यों नहीं, यह इसलिए क्योंकि संसार सुसमाचार को नकारात्मक रूप में देखता है तथा इसका विरोध करता है? नहीं! बहुत से लोगों से जब यह पूछा जाता है कि किसी मित्र के बुलाये जाने पर क्या आप कलीसिया में आना पसन्द करेंगे, तो वह कहते हैं ''हाँ ज़रूर।'' ज़्यादातर लोग जिनके साथ हम प्रभु का वचन बाँटते हैं वह सुसमाचार का स्वागत करते हैं। सारे ही लोग सुसमाचार को नहीं ग्रहण करते हैं परन्तु इस विषय पर चर्चा करने से उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। वह इसे समझना चाहते हैं।

संसार बदल रहा है। संसार नाश की तरफ बढ़ता चला जा रहा है- सारी बातें अर्थहीन जान पड़ती हैं। परन्तु सुसमाचार अर्थ से भरा है। यह इस आशाहीन संसार में हमें आशा प्रदान करता है। अधिकतर लोग इसे सुनना चाहते हैं। हमें केवल उन तरीकों को जानने की आवश्यकता है जो उचित है।

बहुत से तरीके हैं। कुछ तरीके दूसरे तरीकों की तुलना में अधिक प्रभावशाली हैं। आपको रचनात्मक बनने को प्रोत्साहित करते हुए कुछ उदाहरण यहाँ दिये गये हैं।

1. लोगों को कलीसिया में आमन्त्रित करें। अपने मित्र से उसके मित्र को कॉफी की दुकान या रैस्टोरैन्ट में आपसे मिलाने को लाने के लिए कहें। उस मित्र से जान पहचान बढ़ायें तथा उसे चर्च में अपने जीवन समूह में आने के लिए आमन्त्रित करें।

2. पड़ोसियों हेतु प्रश्नावली (इस अध्याय के अन्त में नमूने को देखें) यह कार्य हेतु सहज और बहुत प्रभावशाली है। एक व्यक्ति तथा उसके मित्र ने हाल ही में 1 घण्टे के भीतर 12 घरों में फोन किया। उन्होंने 8 लोगों से बातचीत की तथा 5 लोगों को प्रभु का सुसमाचार सुनाया, और उनमें से 3 लोगों ने प्रभु को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की। लोग इतने ज़्यादा खुले मिजाज़ के हैं कि वे अन्जान लोगों से भी बातें करते हैं तथा दरवाज़े पर भी यीशु को स्वीकार कर लेते हैं।

3. व्यक्तिगत गवाही
   जब कभी आपको अवसर मिलता है अपनी एक मिनट की गवाही को लोगों में बाँटें। जो प्रभु ने आपके लिये किया है उसे लोगों को जानने की आवश्यकता है। प्रत्येक मसीही के पास अपनी गवाही को बाँटने के लिए एक सहज तरीका होना चाहिए। अपने मित्र की सहायता करें उसकी ''जीवन गाथा'' को एक माला में पिरोने के लिए उसकी सहायता करें। अध्याय एक में कार्यालय पृष्ठ का इस्तेमाल करें।

4. सुसमाचार पुस्तिकाएं।
   सदैव अपने पास सुसमाचार और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण पुस्तकों को अपनी जेब या बटुवे में रखें, ताकि आप तैयार रहें।

5. चलचित्र या विडियो
   - यीशु फिल्म
   - विवाह
   - अभिभावक व युवा सम्बन्धित
   - धूम्रपान; व बुरी आदतों सम्बन्धित इत्यादि।

आप इनमें से एक चीज़ को अपने मित्र के पास छोड़कर बाद में उनसे जानकारी पाप्त कर सकते हैं या फिल्म पर अपने दृष्टिकोण ज़ाहिर करने के लिए शाम को आप उन्हें बुला सकते हैं। यह किसी भी समय किया जा सकता है। ख़ास उपलक्ष्य जैसे क्रिसमस या ईस्टर इन बातों के लिए सर्वाधिक उचित अवसर है।

6. दोस्ताना पार्टियाँ
   किस प्रकार से आप एक मित्रता की पार्टी कर सकते हैं जानने क लिए पुस्तक किस प्रकार मित्रता पार्टी करें से निर्देश व कार्य सीख सकते हैं। अपने जीवन समूह तथा दोनों के बीच में एक पार्टी का आयोजन सम्बन्धी यह एक उत्तम पुस्तक है।

7. एक से एक को सामर्थी वक्तव्य
   एक से एक की तकनीक पुन: उत्पादन करने वाले स्वभाव, के परिणाम स्वरूप आप अधिक लोगों तक सुसमाचार को पहुँचा सकते हैं। प्रारम्भ में इसके लिए आपको धीरज की आवश्यकता पड़ेगी क्योंकि इसकी शुरूआत में बहुत कम लोग होंगे। जैसे-जैसे आप उन लोगों को प्रशिक्षित करते हैं जो दूसरों को शिक्षा देते हैं तब यह गिनती बढ़ती चली जायेगी। जैसे ही आप एक को प्रकाशित कर चुके होते हैं दूसरे को शिक्षा देना प्रारम्भ करें। अपने पास्टर या भ्रमण के आयोजन कर्ता से लोगों के पते प्राप्त करें। अपनी कलीसिया के मुलाकात के लेखे के फार्म में प्रत्येक सेवकाई का विवरण दें जो उन्होंने चर्च के सदस्य के घर पर की। अपने प्रभाव के दायरे की सूचि में नये नये नामों को लिखते चले जायें। प्रत्येक के लिए प्रार्थना करें तथा प्रत्येक के साथ यीशु का सुसमाचार ज़रूर बाँटें।

8. यीशु को जीवन शैली के रूप में बाँटे
   अब आपने सुसमाचार बाँटना सीख लिया है, और ऐसा करने के बहुत अनुभव भी आपके पास हैं, अब आप कभी भी, कहीं पर सुसमाचार बाँटने के लिए तैयार हैं। यहीं पौलुस का दर्शन और बोझ था। अपने जीवन में ऐसे सिद्धान्तों को पालन करना शुरू करें।

जीवन शैली के रूप में गवाह कैसे बनें

क. परमेश्वर व लोगों के लिए उपलब्ध रहें

2 तिमुथियुस 4:29 यह पद आपके लिऐ क्या मायने रखता है?

परमेश्वर आपकी योग्यताओं से बढ़कर आपकी उपलब्धता में रूचि रखता है। वह लोगों को आपके द्वारा मसीह में लायेगा यदि आप उसके लिए उपलब्ध हैं।

ख. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको गवाही बाँटने का अवसर प्रदान करें।

1. विशेषतौर पर बात करें। परमेश्वर से उसकी ईश्वरीय मुलाकात करने के लिए प्रार्थना करें। उससे प्रार्थना करें कि वह आपकी किसी व्यक्ति तक अगुवाई करें।
2. यदि आप एक व्यक्ति के साथ प्रार्थना हेतु कुछ समय के लिए अकेले हैं तो उसे अपनी प्रार्थना का जवाब मानें।
3. सुसमाचार सुनाने के एक अवसर को एक सौभाग्य समझें, कोई जिम्मेदारी नहीं।

ग. जहाँ लोग हैं वहीं उनसे मिलें।

बहुत से लोग अपना ज्यादातर समय दूसरे विश्वासियों के साथ एक मसीही गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाने में बिता देते हैं और ग़ैर मसीहियों तक जाने के लिए उनके पास बहुत कम समय बाकी बचता है।

ग़ैर मसीहियों को सुसमाचार सुनाने के लिए आपको वहाँ जाना चाहिए जहाँ वह रहते हैं। सतर्क रहें, और जैसे ही प्रभु आपको अवसर प्रदान करता है उनमें सुसमाचार बाँटें।

घ. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि प्रभु आपके प्रत्येक मिलने वाले के प्रति आपके मन में प्रेम उत्पन्न करें।

1. दोस्तान व्यवहार करें।
2. वार्तालाप को प्रश्न पूछने के द्वारा प्रारम्भ करें। ऐसे प्रश्न जिसमें, कहां, कौन, कैसे, क्या, कब और क्यों आपकी बात को आगे बढ़ायें।

   अ. यूहन्ना 4:7 पढ़ें, कुऐ पर उस स्त्री से यीशु ने क्या प्रश्न पूछा?

   उसने उससे यह प्रश्न क्यों पूछा?

   आ. प्रे० के काम 8:30 पढ़ें फिलिप्पुस ने क्या प्रश्न पूछा?

उसने यह प्रश्न क्यों पूछा?

3. कुछ ऐसे प्रश्नों का सुझाव:

क. एक पड़ोसी से कहें
''नमस्ते, मेरा नाम ________ है।
मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। आप यहाँ कितने सालों से रह रहे हैं?''

ख. एक संगी यात्री से:
''नमस्ते, मेरा नाम ________ है। आप कहाँ जा रहे हैं?''

ग. दूसरों से:
''क्या आप इसी शहर में रहते हैं?''
''आप क्या काम करते हैं?''
''क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ।''
''क्या आप मेरी ________ मैं सहायता कर सकते हैं।''

घ. मसीह के बारे में चर्चा करें
प्रे० के काम 8:4 को पढ़ें। यह विश्वासियों के बारे में क्या कहते हैं।

प्रथम शताब्दी के मसीहियों ने जहाँ कहीं भी वह गये उन्होंने सबमें प्रत्येक दिन मसीह का प्रचार किया। आज हमारी आखें खुलने की आवश्यकता है कि हम लोगों से मिलें तथा उन्हें सुसमाचार प्रचार करें। आप अपने में अनोखे व्यक्ति हैं जिनका प्रभाव एक खास क्षेत्र में है आपको किसी की नकल करने की आवश्यकता नहीं है। लोगों के साथ प्रश्नोत्तर करने के द्वारा अपने अनुभवों को बाँटने के द्वारा सम्बन्धों में घनिष्ठता बनायें तथा फिर माहौल बदलने जिससे आपको सुसमाचार सुनाने का अव्सर प्राप्त होगा।

स्थिति परिवर्तन का नमूना

1. *''मैं एक छोटी पुस्तक को पढ़ रहा था जिसमें मुझे बहुत कुछ समझ में आया। क्या मैं आपको यह बातें बाँट सकता हूँ?*
2. *''मेरे पास एक पुस्तक है जो यह बताती है कि एक सच्चा मसीही होने का क्या मतलब है क्या मैं उसे आपके साथ बाँट सकता हूँ।*
3. एक छोटी सी व्यक्तिगत गवाही देते हुए कहें, *''आइये मैं आपको बताऊ कि एक मसीही होने में क्या-2 शमिल होता है।''*
4. *''क्या कभी आप आत्मिक बातों के बारे में सोचते हैं?''* या *''क्या आप आत्मिक बातों में इच्छुक हैं?''*

5. *''क्या मैं आपके साथ बाँट सकता हूँ कि आज मसीह यीशु हमारे जीवन में कैसे कार्य करता है? क्या आपके पास थोड़ा सा समय है।''*
6. *''क्या आप अपने आप को उस स्थान पर पाते हो जहाँ आपको भरोसा हो कि यदि आज ही मेरा डेरा उठा लिया जाता है तो मैं स्वर्ग में होऊंगा?''* यदि हाँ कहें, ''कल्पना करें कि यदि आज आपकी मृत्यु हो जाये और परमेश्वर के सम्मुख खड़े हों और परमेश्वर कहे'' मैं तुम्हें अपने स्वर्ग में क्यों आने दूं?'' तब आप क्या करेंगे?**

* केनेडी ई. ई. प्रश्न

ऐसी रणनीति का चुनाव करें जो आपके तथा उनके लिए उचित रहे जिनके साथ आपको परमेश्वर का प्रेम बाँटने का अवसर प्राप्त होता है।

याद रखें:

परमेश्वर और लोगों के लिये उपलब्ध रहें।

परमेश्वर से गवाही के अवसरों के लिये प्रार्थना करें।

जहाँ लोग हैं वहाँ ही उनसे मिलें।

जिससे भी मिलते हैं उनमें उस प्रेमपूर्ण रूचि के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करें।

मसीह के बारे में बात करें।

परमेश्वर आपको आशीष दे जब आप यीशु मसीह का शुभ सन्देश दूसरे लोगों में बाँटते हैं और उन्हें भी ऐसा ही करने का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

पड़ोसियों के लिए प्रश्नावली

निर्देश:

1. जाने से पहले प्रार्थना करें यदि दूसरा व्यक्ति वचन बाँट रहा है तब वह जो वचन नहीं बाँट रहे हैं उन्हें शान्त रहकर प्रार्थना करनी चाहिए।
2. प्रत्येक परिवार से विनयपूर्वक मिलें।
3. घरों में जाने से पहले प्रश्नावली (सम्भव हो तो क्लिप बोर्ड पर) पेन, पैन्सिल सुसमाचार और पवित्र-आत्मा की छोटी पुस्तिकाओं को पहले से तैयार करके रखें।

   आपके साथी को आपकी कलीसिया से सम्बन्धित साहित्य को लाने के साथ ही साथ प्रत्येक घर की सूचना को रिकॉर्ड सूची में नोट करना चाहिए।

नोट: सुसमाचार की पुस्तिका को हमेशा क्लिपबोर्ड के ऊपर रखें ताकि प्रश्नावली के पूरा हो जाने पर यह प्रयोग किये जाने के लिये आँखों के सामने रहे।

4. प्रश्नावली से परिचय पढ़ते हुए (या अपनी ओर से) मित्रतापूर्ण अपना परिचय दें।
5. प्रश्नों को पढ़ें। यदि वे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तब अगले प्रश्न के लये बढ़ें। जब आप अन्तिम प्रश्न बोल रहे हैं, सुसमाचार पुस्तिका को खोलें और तुरन्त इससे बाँटने के लिये तैयार हो जाऐं।
6. यदि वह प्रश्नावली को नहीं पढ़ना चाहते हैं तब उनसे छोटी पुस्तिका को बाँटने के लिये कहें। कहें, **''क्या मैं यह बताने के लिये कि परमेश्वर को किस प्रकार से व्यक्तिगत रूप से जाना जाता है, आपके साथ इस लघु पुस्तिका को बाँट सकता हूँ।''**
7. यदि वह उस समय पर उस लघु पुस्तिका को नहीं पढ़ना चाहते हैं तब उसे उन्हीं के पास छोड़ने का आग्रह करें साथ ही आपकी कलीसिया के कुछ साहित्य को भी देने के लिये आग्रह कर सकते हैं।
8. अगले घर में जाऐं।
9. घरों में जाते समय आपके साथी को एक से दूसरे घर के बीच रिपोर्ट सूची को भर देना चाहिये।
10. यदि इसमें आगे और सम्पर्क, घर से घर में सूचना स्थानान्तरण, अतिथियों का रिकॉर्ड /सम्पर्क सूची आदि किसी भी और बात की ज़रूरत हो तब भ्रमणकारी सह-सहायक को यह कार्य भार सौंपें।

सुनिश्चित हों कि जितने भी घरों में जाने की आपने योजना बनायी है उन सभी के लिये आपके पास आपके चर्च की सूचना-सूची तथा पड़ोसियों हेतु प्रश्नावली की पर्याप्त प्रतिलिपियां हैं या नहीं, आपको घर से घर में भ्रमण की सूचना सूची की प्रतियों की भी ज़रूरत पड़ेगी जैसा कि अगले पृष्ठ में इसे दर्शाया गया है।

पड़ोसियों के लिए प्रश्नावली

परिचय:

''नमस्ते, मैं ______________ हूँ और यह ______________ है, हम लोग ______________ कलीसिया से हैं। हम अपने समुदाय की आवश्यकताओं को जानने के लिये एक प्रश्नावली को लागू कर रहे हैं। क्या आप इन सात प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कुछ मिनट का समय लेंगे?

पूछें:

1. इस समुदाय में रहते हुए आपको कितना समय हो गया है? ______________
2. आपके अनुसार हमारे समुदाय के लोगों की सबसे बड़ी आवश्यकता क्या है? ______________
3. कलीसिया को इसे और अच्छा समुदाय बनाने के लिये क्या कार्य करना चाहिये? ______________
4. क्या आप स्थानीय कलीसिया में जाया करते हैं? ________ हाँ ________ नहीं

   यदि ''नहीं'' पूछें: यदि आपका कोई मित्र आपकों आमन्त्रित करता तो क्या आप चर्च जाते? ________ हाँ ________ नहीं
5. क्या इस समुदाय की कलीसिया लोगों को परमेश्वर के निकट जाने की भूमिका को पूरा कर रही है? ________ हाँ ________ नहीं
6. क्या आप परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं? ________ हाँ ________ नहीं
   यदि 'हाँ' पूछें : क्या आप अपने आत्मिक जीवन के उस स्तर पर आ चुके हैं कि यदि आज आपकी मृत्यु हो जाए तब आप इस बात के लिये सुनिश्चित है कि आप स्वर्ग जायेंगे?''* ________ हाँ ________ नहीं

   यदि ''हाँ'' तो कहें: ''मान लीजिए आज आपको मरना है और परमेश्वर के समक्ष खड़े होना है, और जब वह आपसे पूछे 'क्यों मैं तुम्हें अपने स्वर्ग में आने दूँ?' आप क्या कहेंगे?''*
   अगर ''नहीं'' या ''निश्चित नहीं'' तब अगले प्रश्न की ओर बढ़ें।
7. बाइबल बताती है कि हम परमशेवर को व्यक्तिगत रूप से जान सकते हैं और अनन्त जीवन पा सकते हैं। क्या मैं इस सबसे महत्वपूर्ण सम्बन्ध के विषय में इस छोटी पुस्तिका से चर्चा करने के लिये कुछ मिनट का समय ले सकता हूँ।
   यदि ''हाँ'' तब सुसमाचार या पवित्र आत्मा की लघु पुस्तिका को बाँटें।

   यदि ''नहीं'', क्या मैं अपनी कलीसिया के बारे में इस लघु पुस्तिका को तथा कुछ और साहित्य को आपके पास छोड़ सकता हूँ?''

*कैनेडी ई.ई. प्रश्न

घर से घर में कलीसिया का लेखा

कलीसिया का नाम: ______________

कृपया छापें
सम्पर्ककर्ता: ______________
तिथि: ______________
गली: ______________

घर**	नाम**	सम्पर्क साधा हुआ	पुन: सम्पर्क किया	आत्मिक प्रश्नावली	पूर्ण प्रश्नावली	सुसमाचार पुस्तिका को बाँटा	पवित्र आत्मा की पुस्तक को बाँटा	मसीह की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की	पहले से ही एक मसीही हैं	घरेलू कलीसिया है (हाँ / नहीं)	आगे के कुछ सम्पर्क (हाँ / नहीं)	मैं अनुसरण करूंगा	विशेष ध्यान की आवश्यकता है	टिप्पणी

* व्यक्ति का नाम केवल तभी लिखें जब वह इच्छुक है या प्रभु यीशु को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करता है।
** घर का नम्बर तभी लिखें जब वहाँ सम्पर्क बनाने का कोई साधन हो।

इस लेखे को लिखना न भूलें। हो सकता है कि आप अपनी जानकारी के लिए लेखे की एक प्रति बनाना चाहें।

मेहमान / मुलाकात लेखा

इसे भरकर तुरन्त सुपुर्त किया जाये

सेवकाई का क्षेत्र ______________________ दिनाँक : __________

लिखित व्यक्ति ______________________

नाम ______________________

पता ______________________

फोन (निवास) __________ कार्यालय __________ आयु __________

जीवन साथी ______________________ आयु __________

बच्चे 1. ______________________ आयु __________

2. ______________________ आयु __________

3. ______________________ आयु __________

4. ______________________ आयु __________

मेहमान ______________________

के द्वारा मुलाकात की गयी ______________________

और ______________________ दिनाँक __________

टिप्पणी व सिफारिश: ______________________

सामर्थी वक्तव्य

शिक्षकों के लिए सामान्य निर्देश

बधाई हो। आपने प्रशिक्षण पूरा कर लिया है तथा अब आप इस योग्य हैं कि दूसरों को प्रशिक्षित कर सकें।

आप अब दूसरों को मसीह के लिए एक गवाह बनने की प्रक्रिया हेतु प्रभावित करने वाली उत्तेजना से भरी यात्रा को प्रारम्भ करने जा रहे हैं।

जैसे-जैसे आप दूसरे लोगों को विश्वास व आज्ञाकारिता में बढ़ने में सहायता करेंगे, आपको स्वयं में मसीह के प्रति आज्ञाकारी होने की अनुभूति प्राप्त होगी।

प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर की योजना यह है कि वह उसका गवाह बने। आप उस कार्य का प्रमुख हिस्सा हैं जिस कार्य के प्रति वह चाहता है कि उसके लोग इस संसार में इसे पूरा करें। क्या इससे भी महत्वपूर्ण कोई कार्य है?

''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूँढ़ने व उन्हें बचाने आया है।'' - लूका 19:10

परमेश्वर की रणनीति

परमेश्वर की हमारे लिए यह योजना है कि सुसमाचार सुनाने के द्वारा हम चेले बनायें तथा उन्हें आज्ञा मानना सिखायें। हमें आज्ञाकारी होना है और यही स्वभाव दूसरों में बाँटना है।

यदि आप प्रत्येक चार माह में एक व्यक्ति को प्रशिक्षित करते हैं (तीन व्यक्ति प्रति वर्ष) और वह लोग भी अपने प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात से प्रति चार माह में एक व्यक्ति को चेला बनाना प्रारम्भ करे तो कुछ इस तरह के परिणाम होंगे:

वर्ष	योग
1	7
2	49
3	343
4	2,401
5	16,807

यह क्रम पुन: उत्पादन है। शिष्य निर्माण प्रक्रिया में (मत्ती 28:18-20) हमें सुसमाचार प्रचार के लिए जाने में और आज्ञा मानना सिखाने में आज्ञाकारी रहना होगा। जिस प्रकार पौलुस ने तिमुथियुस को शिक्षा दी, जो ऐसे वफादार (विश्वास योग्य) लोगों को शिक्षा देने पर था, जो औरों को भी सिखा सकें, सो हमें भी ठीक इसी प्रकार से करना है।

पुनः उत्पादन एक मुख्य कुंजी है: यह धीरे-धीरे प्रारम्भ होती है परन्तु जब **गुणन प्रक्रिया** होने लगती है तो इसका अत्याधिक विस्तार हो जाता है।

पौलुस → तिमुथियुस → विश्वास योग्य मनुष्य → अन्य
मैं → मेरे शिष्य → उनके शिष्य → अन्य

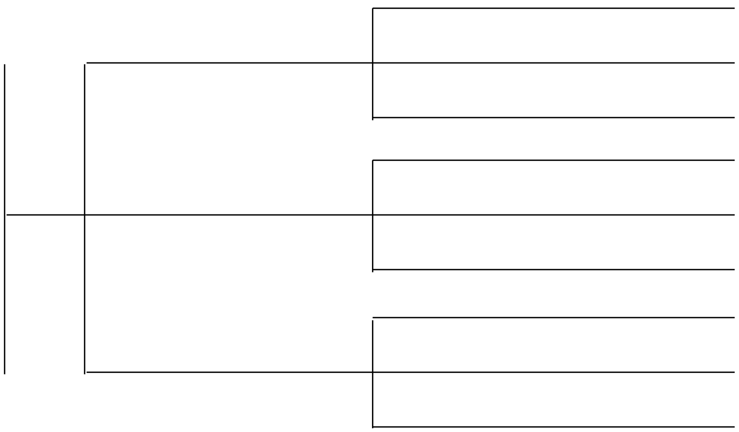

जिन्हें आपने प्रशिक्षित किया और जिनको उन्होंने प्रशिक्षित किया उनका लेखा रखें। पुन:उत्पादन की कुँजी यह है कि आप ऐसे लोगों का चयन करें जो, इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे और तब तक उनके साथ लगे रहें जब तक वह कम से कम तीन ऐसे लोगों को शिष्य न बना लें जो औरों को भी सिखा सके।

सामर्थी वक्तव्य, एक से एक को

एक से एक व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के लाभ

- इसके द्वारा शिक्षक व विद्यार्थी दोनों की पूर्ण क्षमता सामने आती है।
- ऐसे लोगों का निर्माण होता है जिनमें निरुत्तर होने के कारण स्वस्थ्य विचार होते हैं।
- आत्म-निर्भरता में मज़बूती आती है।
- शिष्यों को स्पष्ट रूप से भावनाओं को व्यक्त करना आ जाता है।
- इससे अधिकतम सम्मलित हुआ जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।
- यह उन्हें नये विचारों का स्वागत करना सिखाता है क्योंकि वह जानते हैं कि वह नयी योग्यताओं का निर्माण कर रहे हैं और आपकी शिक्षाओं का स्वागत करेंगे।

- अनौपचारिक बनाता है। शिक्षक व शिष्य जानते हैं कि दूसरों को कैसा महसूस हो रहा है तथा यह उन्हें ज़रूरतमन्द लोगों की मदद करने का अवसर प्रदान करता है।
- इसमें सफल होने के लिए ऐसे योग्य अगुवे की आवश्यकता नहीं है जो जनता में भाषण देने योग्य हो। लगभग सभी लोग व्यक्तिगत प्रशिक्षण कर सकते हैं।
- शिक्षक को इस योग्य बनाता है जिससे वह जाँच सके कि वास्तव में विद्यार्थी सीख रहा है या नहीं।
- निरन्तर पुनः उत्पादन करता है। एक से एक कार्यक्रम धीरे-धीरे कुछ लोगों के साथ प्रारम्भ होता है। जैसे-जैसे प्रत्येक जन पुनः उत्पादन करते हैं तो लोगों को दूसरों में अपना विश्वास बाँटने के प्रति तैयार करने क्षमता असमान होती है। पुन:उत्पादन प्रशिक्षण ही इस जगत के लोगों तक पहुँचने तथा अपने परमेश्वर की महान आज्ञा को पूरा करने की एक मात्र आशा है।

उद्देश्य

सामर्थी वक्तव्य, एक से एक को प्रणाली का मुख्य उद्देश्य, अपने विश्वास को रूपान्तरित करने वाली विधि को सीखने व उसका पालन करना तथा उसे दूसरों को सिखाना है।

लक्ष्य

1. शिष्य को दर्शन प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है।
2. शिष्य के विश्वास को गवाही देते समय पवित्र आत्मा की सामर्थ्य व निर्देशन में बढ़ाता है।
3. शिष्य की व्यक्तिगत गवाही को बाँटना सीखने में सहायता करता है।
4. जीवन और वचन के द्वारा शिष्य को मसीह का गवाह बनने के प्रति तैयार करता है।
5. छोटे समूह या एक से एक को प्रशिक्षण में आये प्रत्येक व्यक्ति का निर्माण करता है।
6. शिष्यों की दूसरों को गवाही बनने व अपने जीवन को दूसरों में पुन:उत्पादन करने की शिक्षा प्रदान करने में सहायता देता है।
7. अधिक से अधिक गवाह बनने वाले शिष्यों का निर्माण करना है ताकि सारे संसार के लोग प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को सुन सकें।

किस प्रकार से शिष्यों का चुनाव करें-

1. प्रार्थना करें। परमेश्वर से ऐसे व्यक्ति की तरफ अगुवाई करने को कहें, जो उसके मन-अनुसार हो।
2. जो आपके जीवन समूह में है उन्हें चुनौती (प्रेरणा) दें।
3. जिन्हें आपने मसीह में अगुवाई की, उन्हें प्रशिक्षित करें।
4. कलीसिया में अपने मित्रों पर ध्यान दें।
5. एक पुरुष जो पुरुष को शिक्षा देता, व एक स्त्री जो स्त्री को प्रशिक्षण देती है।

आप किसी को प्रशिक्षित होने के लिए कैसे प्रेरित करते हैं

1. व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करें।

2. उस व्यक्ति को बतायें कि सामर्थी वक्तत्व तथा एक से एक प्रशिक्षण का क्या मतलब है। (अध्याय पांच के अन्त में प्राप्त ''सामर्थी वक्तव्य, एक अवसर'' का प्रयोग करें)

3. उस व्यक्ति को बतायें कि यह प्रशिक्षण आपके लिए क्यों महत्वपूर्ण है तथा आपको इसके द्वारा कैसे फायदा पहुँचा है।

4. संसार तक प्रभु के वचन को पहुँचाने, हेतु गुणन रणनीति में हिस्सा होने के अपने दर्शन को बाटें।

कैसे प्रारम्भ करें

1. व्यक्ति को छ: सप्ताह का समय समर्पण करने के लिए प्रेरित करें। उसे विस्तार से उल्लेख करें कि इसमें शिक्षा सम्बन्धित उत्तरदायित्व, साप्ताहिक तौर पर एक घण्टा अध्यायों पर चर्चा करने के लिए मिलना, तथा प्रत्येक सप्ताह सुसमाचार प्रचार के लिए जाना शामिल है।

2. अपने छ: सत्रों को छ: सप्ताह में समाप्त करने का प्रयास करें। जब आप मिलें तो पुन: मिलने की तारीखों को चुनें तथा उसे कलैण्डर में निशान लगा लें।

कब मिलें

1. आप और आपके शिष्य कभी भी मिल सकते हैं बशर्ते वह समय आप दोनों व जिसके पास आ जा रहे हैं उसके लिए आरामदायक समय हो।

2. लगातार छ: सप्ताह तक ठीक उसी समय पर मिलने का प्रयास करें। सुसमाचार के नियुक्त समय को उपलब्ध कराने के लिए अपने समय कार्यक्रम में समायोजन करें।

3. आप शायद चर्च में मिलना चाहेंगे व उसके साथ-साथ आप दूसरे शिष्यों से भी प्रत्येक सप्ताह, एक-से-एक के प्रशिक्षण को पूर्ण करने के लिए मिलें।

सुझावित-समय-सारणी:

6:45	• एक से एक अध्याय को पुन: पढ़ना
7:45	• सारे लोग एक साथ मिलें
	• नाम प्राप्त करें (यदि आपके पास मुलाकात करने के लिए आयोजक है)
	• एक साथ मिलकर प्रार्थना करें
8:00 बजे	• प्रत्येक दल (प्रशिक्षक और शिष्य) अपने निर्धारित स्थान पर जाये।

दूसरों के साथ प्रशिक्षित करने का फायदा

क. परस्पर उत्साहित करें।
ख. दृढ़ता। आगामी बातों की योजना बनाने के लिए आप नियुक्त समय निर्धारित कर सकते हैं।
ग. एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी रहना उनकी नियत प्रक्रिया होगी।
घ. बहुत से अवसर आपको प्राप्त होंगे।
ड़ सामुहिक प्रार्थना को बढ़ावा मिलेगा।

प्रशिक्षक के लिए निर्देशिका

मुख्य निर्देश

1. शिष्यों से मुलाकात करने से पूर्व उचित अध्याय को लेकर तैयारी करें।

2. प्रत्येक पाठयक्रम के लिये मूल्यांकन सूची को पूर्ण करें।

3. प्रत्येक सत्र के दौरान आप निम्नांकित उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिये एक साथ, लगभग एक घण्टे की सभा में समय देंगे:
   - पाठ्य सामग्री को समझना।
   - साथ बांटना।
   - भूमिका का अभिनय।
   - प्रार्थना करना।

   तब आप प्रेरिताई भ्रमण के लिये निकलेंगे (सामान्य तौर पर, यह भ्रमण यात्रा समय को मिलाकर एक घण्टे का समय लेगा)।

4. प्रेरिताई के समय को कम से कम एक सप्ताह पहले निर्धारित करें। और जब आपने वह समय नियुक्त कर लिया हो तब प्रार्थना करें कि इस कार्य में किसी प्रकार की बाधा न पड़े।

सम्भव प्रकार की नियुक्तियाँ:

अ. जो कलीसिया में आते हैं उनमें से किसी के भी घर जाकर मिलें।

ब. जिन्होंने कलीसिया से सम्पर्क साधा हो उनसे मिलें, जैसे कि बच्चों के माता-पिता या ऐसे जवान जो कलीसिया की गतिविधियों में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हैं।

स. घर-घर भ्रमण करने के लिये पड़ोसियों हेतु प्रश्नावली को ले जाएं जो कि सुसमाचार प्रचार के लिये ही बनायी गयी है (देखें नमूना)। अतिथि/सम्पर्क सूचना को पूर्ण करके अपने जीवन समूह अगुवे या भ्रमणकारी सह-सहायक को उसे सौंपने के लिये याद रखें।

द. सत्र चार या छः में आप अपने व्यक्तिगत मित्रों से मिलेंगे।

5. प्रत्येक प्रेरिताई सभा में साथ मिलकर प्रार्थना करें। हर एक बात के लिये प्रभु का धन्यवाद करें और जो लोग मिलने के लिये आते हैं उनके लिए प्रार्थना करें।

6. छठा सत्र पूरा करने के बाद ''उपलब्धि का प्रमाण-पत्र'' प्रदान करें। जब उचित हो तो अपने जीवन समूह में प्रमाण-पत्र प्रदान करें।

   जिन लोगों ने सामर्थी आधार, शिष्यता और वक्तव्य को पूरा कर लिया हो उन्हें रविवार की सभा में पास्टर द्वारा खास सम्मान दिया जाए।

सामान्य निर्देशः

1. संगति के समय का आनन्द उठायें। परमेश्वर की स्तुति करने में समय बिताएं।

2. प्रत्येक दिन लोगों के प्रति प्रेम से भरें व सहायक रहें।

3. अपनी कमज़ोरियों को मानने में खुले रहें परन्तु इस बात पर ज़ोर डालें कि मसीह आपको सामर्थ देने के लिये काफी है (2 कुरिन्थियों 12:8-10)। आप दोनों परमेश्वर पर भरोसा करना सीख रहे हैं।

4. अपने शिष्य के लिये निरन्तर प्रार्थना करें।

5. उत्तेजित रहें। आपका स्वभाव लोगों पर प्रभाव डालता है।

6. अपनी गवाही में विश्वासयोग्य होने को ध्यान में रखते हुए बताऐं कि परमेश्वर आपके जीवन में कैसे कार्य कर रहा है।

7. जब आप देखते हैं कि परमेश्वर लोगों के जीवन में कार्य कर रहा है तब उसके प्रति धन्यवादित रहें।

सामर्थी जीवन प्रक्रिया का विवरण

सामर्थी जीवन प्रक्रिया के चित्र को किस प्रकार समझायें

चित्र व निम्नलिखित टिप्पणियों को लेकर प्रक्रिया के प्रत्येक पहलू को समझायें।

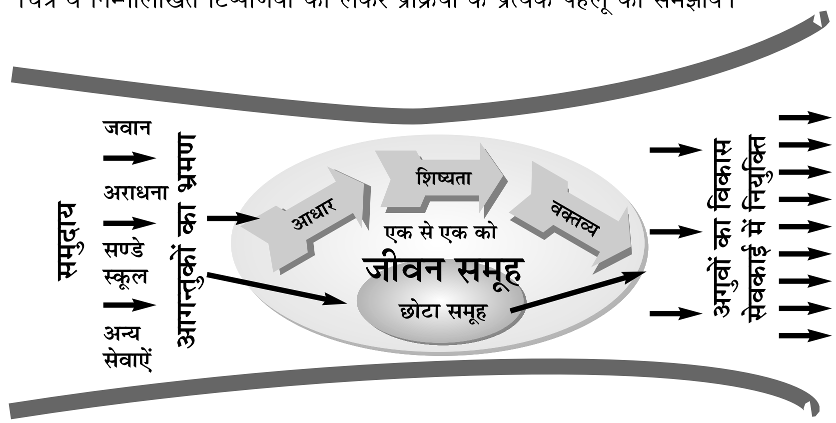

1. **समुदाय**। जैसे-जैसे हम अपने समाज तक पहुँचकर प्रभु के प्रेम का समाचार सबको सुनाते हैं; हम नये लोगों को अपने कलीसिया के परिवार में आकर्षित करेंगे।

2. **जवान, आराधना, सण्डे स्कूल, छोटा समूह तथा अन्य सेवकाईयां,** यह सब नये लोगों को अवसर प्रदान करते हैं ताकि नये लोग कलीसिया की अनेकों गतिविधियों में शामिल हो सकें। इन सेवकाइयों के द्वारा हमारा लक्ष्य होगा कि हम आगन्तुकों के नाम प्राप्त कर सकें।

3. **आगन्तुकों का भ्रमण**। नये लोगों से मिलने के लिए सम्पर्क स्थापित किया जायेगा। जो आगन्तुक आ चुके हैं उनका परिचय दल के अन्य सदस्यों से कराया जायेगा, जिन्हें कलीसिया की सेवकाईयों द्वारा सूचित किया जा चुका होगा कि (ज़रूरत पड़ने पर) सुसमाचार प्रचार करें और उन्हें जीवन समूह (छोटा समूह या एक से एक को प्रशिक्षण में) में आने के लिए आमन्त्रित करें।

जीवन समूह = छोटा समूह + एक से एक को

4. **छोटा समूह**। प्रत्येक सप्ताह नये लोग जो लोग एक से एक को प्रशिक्षण के द्वारा तैयार हो चुके हैं, उनके साथ सप्ताह में डेढ़ घण्टे से दो घण्टे एक साथ मिलते हैं ताकि बातचीत, बाइबल अध्ययन तथा प्रार्थना के दौरान वह घनिष्ठ मित्रा बना सकें।

5. **एक से एक को**। जैसे जैसे वह तीन निम्नलिखित अध्ययन से होकर गुजरते हैं, एक पुरुष दूसरे पुरुष को तथा एक स्त्री दूसरी स्त्री को सुविधानुसार प्रत्येक सप्ताह बाइबल अध्ययन करने व उनकी शिक्षाओं को लागू करने के लिए मिलते हैं।

6. **सामर्थी आधार**। यह चार सत्रों का अध्ययन एक नये मसीही को वृद्धि हेतु आवश्यक बाइबल की सच्चाइयों से परिचित कराता है।

7. **सामर्थी शिष्यता**। यह नौ सत्रों का अध्ययन एक जवान मसीह के चरित्र व जीवन शैली का निर्माण करता है जब वह उन बातों को मानता है जो उसने सीखीं हैं।

8. **सामर्थी वक्तव्य**। यह छ: सत्रों का अध्ययन आपको भरोसे तथा स्वाभाविक तरीके से अपनी गवाही व विश्वास को बाँटने के लिए तैयार करता है।

9. **अगुवों का विकास**। जैसे क्षमताशाली अगुवों को जाना जाता है उन्हें नव अगुवों की तरह सेवा निभानी है ताकि वह दूसरों को खास सेवकाईयों के लिए अगुवा बना सकें। आप चाहेंगे कि यह नये मसीही उन सारी शिक्षाओं को प्राप्त कर लें ताकि आप उनका इस्तेमाल कलीसिया में कर सकें। इनमें उद्देश्य, ढांचा, बपतिस्मा, तथा सदस्यता जैसे विषय शामिल हो सकते हैं।

10. **सेवकाई में नियुक्ति**। सामर्थी जीवन प्रक्रिया के द्वारा तैयार होने के कारण आप अब दूसरों की बढ़ने में सहायता कर सकते हो। जिस विषय में आपको महारथ हासिल है उसके अलावा भी बहुत से विषयों का चुनाव उनकी वृद्धि के निमित्त किया जा सकता है। (जैसे सामर्थी आधार, शिष्यता तथा वक्तव्य)।

उपलब्धियों का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

________________ ने सफलतापूर्वक

Dynamic Sharing

दिनाँक ________________ को सम्पन्न किया।

____
प्रशिक्षक